ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

ज्येष्ठ २०७५ जून २०१८

अरे ! ये आकाश तो
मोबाईल की स्क्रीन से
बहुत बड़ा है!

₹ २०

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

सामान्य अध्ययन

निःशुल्क परिचर्चा के साथ बैच प्रारंभ

29 अप्रैल

शाम 3:00 बजे

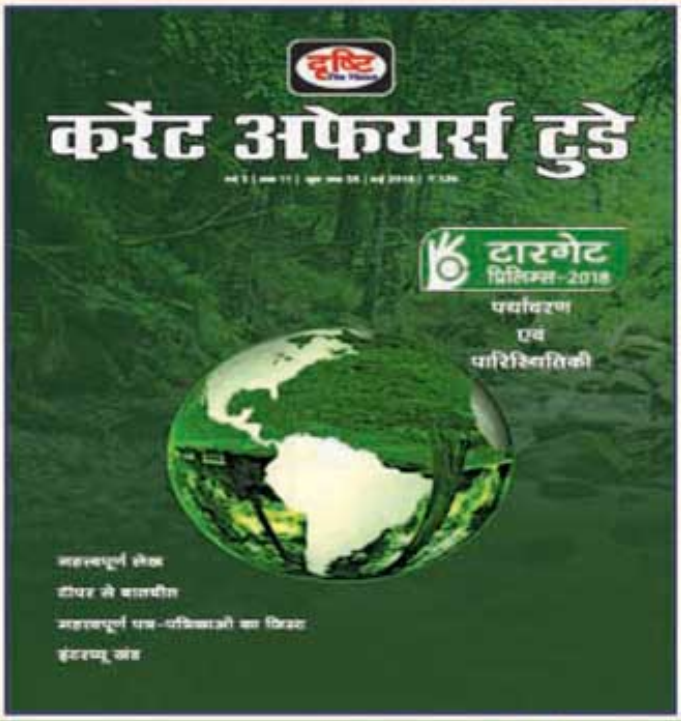

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं
अपनी लोकप्रिय वेबसाइट और यू-ट्यूब चैनल पर

www.drishtiIAS.com

Visit us: YouTube / DrishtiIAS & SUBSCRIBE

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011- 47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

ज्येष्ठ २०७५ ▪ वर्ष ३८
जून २०१८ ▪ अंक १२

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक (कम से कम १० अंक लेने पर)	:	१३० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

अभी एक दिन अखबार पढ़ते-पढ़ते मेरी दृष्टि एक समाचार पर गई। अमेरिका की एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला में लम्बे शोध के बाद यह निष्कर्ष निकाला गया है कि नवजात शिशु और बालक यानी लगभग १० वर्ष की अवस्था तक बच्चे मिट्टी में खेलते हैं तो उनके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यून सिस्टम) अत्यन्त सुदृढ़ हो जाती है।

वैज्ञानिकों ने माना कि नई पीढ़ी के बच्चों के बार-बार बीमार होने का मूल कारण भी बाल्यकाल में मिट्टी में नहीं खेल पाना ही है।

भारतीय दर्शन में कहा गया- ''माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः''। अर्थात् यह धरती हमारी माँ है और हम सब इसके पुत्र हैं। माता की गोद में आते ही हम हमारे सारे कष्ट भूल जाते हैं शायद उसी कारण हमारे यहाँ जब व्यक्ति की मृत्यु निकट आती है तब भी उनकी देह को सीधे धरती पर रखने की परम्परा है। हमने भी अंग्रेजी शिक्षा से 'हाईजेनिक' और 'छीः-छीः' 'गन्दा' जैसे शब्द बच्चों को रटा दिए और अंग्रेजी शिक्षा देने वाले हमारे मूल शिक्षण को वैज्ञानिक मान रहे हैं।

स्वच्छता का ध्यान तो अवश्य रखिए पर कान्हा की तरह बलिष्ठ बनना है, चपल-चंचल रहना है तो उन्हीं की तरह मिट्टी में खेलना पड़ेगा।

बहुत छोटे बच्चे अब जमीन पर लोट लगाएं तो आप सब उनके बड़े भाई-बहन एमदम दौड़ मत पड़ना 'छीः-छीः' कहते हुए। गर्मी की छुट्टियों का आनंद लीजिए इस देश की मिट्टी को शरीर पर लिपटाते हुए क्योंकि आयुर्वेद की भाषा में यह भले मिट्टी चिकित्सा है पर हमें तो यह मिट्टी प्रेरणा देती है कि अवसर आने पर हम अपने प्राण भी न्यौछावर कर सकें 'इस मिट्टी के लिए'।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- उपहार - डॉ. मंजरी शुक्ला ०५
- योग गुरु - पूनम पाण्डे १३
- मन का प्रदूषण - राजेश मेहरा १६
- हुक्का सेन्टर - पवित्रा अग्रवाल २८
- शौचालय - डॉ. सेवा नंदवाल ३२
- नटखट सोहन - जया मोहन ४४

लघु कहानी

- पेड़ों का प्यास - डॉ. अनिल 'सेवरा' ४१

काव्य नाटिका

- लहरताल का कमल - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ १०

कविता

- राणा प्रताप - डॉ. लीला मोदी ०९
- एक पत्र... - जगदीश तोमर १८
- योग साधना - डॉ. विनोदचंद्र पाण्डेय 'विनोद' १९
- योगासन - डॉ. वेद मित्र शुक्ल १९
- प्यारे गाँव - राजकुमार जैन 'राजन' ४२
- झांसी की रानी - रुद्रप्रकाश गुप्त 'सरस' ४३
- गिल्लू जी का चश्मा अनिलकुमार कश्यप ४६

लघु आलेख

- जलप्रपात - सतीश कुमार अल्लीपुरी ३८

प्रसंग

- खम्बा - पुष्पेश कुमार १२

विविध

- भारतीय रेलवे... - प्रो. बी.आर. नलवाया २७
- पहेलियाँ - सीताराम पाण्डेय ३५
- योग रखे निरोग - श्री पति यादव ३६
- अब थोड़ा हंस ले - ३९
- भिन्नता ढूढों - राजेश गुजर ४०
- चित्र बनाओं - राजेश गुजर ४५

बाल प्रस्तुति

- पर्यावरण - गार्गी जमड़ा १२
- व्यायाम करो - नवीन कुमार जैन २९
- समय का सदुपयोग - हरिसिंह चौधरी ३४

चित्रकथा

- पौधे ने कहा - देवांशु वत्स १५
- चन्द्रमा - संकेत गोस्वामी २४
- राजू को सीख - देवांशु वत्स ४७

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - १७
- गाथा वीर शिवाजी की (१०) - २०
- कामरूप के संत साहित्यकार - डॉ. देवेनचन्द्र दास सुदामा ३०
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ३६
- आपकी पाती - ३९
- पुस्तक परिचय ५०

उपहार

कहानी : डॉ. मंजरी शुक्ला

चमचमाती चांदी की तश्तरियों में सजे हुए ढेरों पकवान जो सभी बच्चों के मुंह में पानी ला रहे थे, करीने से सजे हुए थे और एक-एक करके उनके सामने बड़े ही लुभावने अंदाज में परोसे जा रहे थे। बच्चे मेज की ओर बड़ी ही लालच भरी नजरों से देख रहे थे। पर सामने बैठा राजा जो की बड़ी-बड़ी आँखों से उन्हें लगातार देख रहा था उसके डर से बच्चों की मेज तक भी हाथ पहुँचाने की हिम्मत नहीं हो रही थी। खाना तो बहुत दूर की बात थी। असल में ये सभी बच्चे प्रतापगढ़ राज्य के थे और राजा अमरदीप के कहने पर राजमहल में लाये गए थे। राजा से आज से पहले ये बच्चे कभी भी नहीं डरे थे क्योंकि वह अपनी प्रजा को बहुत प्यार करता था खासतौर से बच्चों को तो वह अपनी जान से भी ज्यादा चाहता था। उसने जगह-जगह बच्चों के लिए विद्यालय, खेलने का मैदान और तमाम तरह की कार्यशालाएं चलवा रखी थी, जिनमें बच्चे घुड़सवारी, तैराकी, तीरंदाजी और भी न जाने क्या क्या ज्ञानवर्धक बातें सीखते थे।

राजा से भी सभी बच्चे बेहद प्यार करते थे और हमेशा उनसे मिलने और बातें करने के बहाने ढूँढते रहते थे। पर राजा को तो अपना राज्य सुचारू रूप से चलाने के लिए बहुत सारे महत्वपूर्ण कार्य करने पड़ते थे। इसलिए वह सबसे तो रोज मिल नहीं पाता, था पर वह बच्चों के मन की बात भी जानता था इसलिए उसने अपने जन्मदिन पर एक भव्य आयोजन रखने का एलान करवाया ओर उसमें केवल बच्चों को ही आने का न्यौता दिया। बच्चे तो मानों यह सुनकर खुशी से झूम उठे और वे सभी प्रसन्नता और उत्सुकता से नए कपड़े सिलवाकर महल में जाने की प्रतीक्षा करने लगे, पर जब उपहार देने की बात आई तो सब एक दूसरे का मुँह देखने लगे। यह तो किसी ने सोचा ही नहीं था कि राजा को उनके जन्मदिन पर क्या उपहार दिया जाए। सभी बच्चे अपना दिमाग लड़ाने लगे और ऐसी वस्तु के बारे में सोचने लगे जिससे राजा खुश हो जाए। आखिर सारा दिन दिमाग चलाने के बाद उन्हें याद आया कि राजा को खाने में नमकीन पूड़ियाँ बहुत पसंद हैं इसलिए उन्हें घर से गरमा गरम

पूरी ले जाकर उपहार में देंगे और बस यह सोचते ही सब बच्चे खुशी से उछल पड़े। पर मांदु नाम के एक बच्चे को चुपचाप देखकर सब ने पूछा कि वह सुनकर खुश क्यों नहीं हुआ।

इस पर मांदु कुछ संकोच के साथ बोला– ''पर राजा ने तो हमें वैसे भी दावत पर बुलाया हैं इसलिए वहाँ पहले से ही खाने पीने के इतने सारे लजीज पकवान हमारे लिए होंगे तो हम बस इतनी सारी पूड़ियाँ ले जाकर केवल खाने की बर्बादी ही करेंगे।''

यह सुनकर दूसरा बच्चा बोला– '' तू चाहता नहीं हैं कि राजा हमसे खुश हो इसलिए ऐसी उटपटांग बातें कर रहा हैं। हम सब तो उनके लिए स्वादिष्ट पूड़ी ही ले जायेंगे, तुम्हें नहीं ले जाना हैं तो मत ले जाओ।'' यह कहकर बाकी सभी बच्चे उछलते कूदते अपनी माँ को यह बात बताने के लिए अपने अपने घरों की और दौड़ पड़े।

दूसरे दिन सुबह वे सभी अपने अपने घर से नमकीन पुड़ियाँ लेकर हँसते–गाते और मांदु का मजाक उड़ाते हुए चल दिए क्योंकि सिर्फ मांदु ही था जिसने अपने एक छोटे से थैले में कुछ रखा हुआ था। पर सभी बच्चे जानते थे कि राजा को तो केवल उनका ही उपहार पसंद आएगा और यही कहकर वो मांदु को लगातार चिढ़ा रहे थे। पर वह पलट कर कोई जवाब नहीं दे रहा था क्योंकि वह बहुत अच्छे से जानता था कि कोई उसकी बात समझने के लिए तैयार नहीं होगा और वह बेकार ही बहस में पड़कर अपनी दोस्ती खराब नहीं करना चाहता था। राजमहल के पास पहुँचने पर ही उन्हें हवा में स्वादिष्ट पकवानों की खुशबू आने लगी थी। जिससे उन सभी के मुँह में पानी आ गया। वे सब खुशी खुशी दुगने उत्साह से महल की ओर बढ़ने लगे। सफेद रंग का संगमरमर से बना हुआ राजमहल किसी परी लोक की कल्पना सा लग रहा था। झिलमिल करती रंग बिरंगी झालरों ने मानों महल की खूबसूरती में चार चाँद लगा दिए थे। सजे धजे कपड़ों में सभी लोग हँसते मुस्कुराते राजा को उनके जन्मदिन की बधाइयाँ दे रहे थे। पर राजा तो जैसे बच्चों का ही इंतजार कर रहा था उन्हें आता देख वह खुद ही हँसते हुए उनके पास गया। नए नए सजे धजे कपड़ों में राजा बहुत ही सुन्दर लग रहा था। बच्चों ने उसे जन्मदिन की बधाई देने के बाद जब एक के बाद एक पूड़ियों से भरा टोकरा देना शुरु किया तो राजा हैरान हो गया। उसने अपने सेवकों को बुलवाकर सारे टोकरे एक ओर रखवाए और आश्चर्य से पूछा– ''बच्चो, तुम सब इतनी सारी पूड़ियां लेकर क्यों आये हो, मैंने तो अपने यहाँ तुम सबको खाने पर ही बुलाया था और मैंने ढेरों पकवान यहाँ तुम सबके लिए बनवाकर रखे हुए हैं।''

फिर वह बड़े ही प्यार और धीरे से बोला– ''और अगर तुम्हें पूडियाँ लानी ही थी तो तुम में से कोई एक बच्चा ले आता, अब इतनी सारी पूड़ियाँ कौन खायेगा?''

''तो हम इन्हें फेंक देंगे।'' एक बच्चा तुरंत आगे आते हुए बोला।

''हाँ, हाँ, वैसे भी हम तो यहाँ मजेदार पकवान खायेंगे और ये पूड़ियाँ यही कहीं फेंक देंगे।'' दूसरा बच्चा बोला।

यह सुनकर राजा का चेहरा

तमतमा गया पर वह बच्चों को डाँट डपटकर उस मौके पर किसी का दिल नहीं दुखाना चाहता था इसलिए वह सभी बच्चों को अपने साथ महल में ले गया। महल के अन्दर जाकर बच्चों ने जी भर के खूब मस्ती की और उसके बाद एक से बढ़कर एक स्वादिष्ट व्यंजन खाए।

उसके बाद राजा ने उनसे कुछ दिन अपने महल में ही रुकने को बोला जिसे सभी ने तुरंत बहुत खुश होते हुए मान लिया।

जिस राजमहल को वे सिर्फ दूर से देखते थे आज उसमें उन्हें रहने को मिल रहा था भला ऐसा मौका कौन छोड़ना चाहेगा तो राज ने अपने सेवकों से कहकर बच्चों के घरों पर संदेशा भिजवा दिया कि वे कुछ दिन राजा के साथ ही रहेंगे।

दो दिन तो राजा के यहाँ बच्चों ने बहुत धमा–चौकड़ी मचाई और जी भर के लजीज पकवान खाए। जितना खाया उससे ज्यादा फेंका पर सबने जरूरत भर के खाने से बहुत ज्यादा भोजन लिया जिससे बहुत भोजन बर्बाद हुआ।

राजा सबकी आदतें बहुत ही ध्यान से देख रहा था उसने किसी से कुछ नहीं कहा।

दो दिन तो ऐसे ही हंसी खुशी बीत गए। पर अचानक तीसरे दिन राज घबराता हुआ बच्चों के पास आया और बोला कि पड़ोसी देश के राजा ने हमारे देश पर आक्रमण कर दिया है और उनकी सेनाएं अब राजमहल की ओर बढ़ रही हैं इसलिए अब हमारा महल अन्दर से कुछ दिन बंद रहेगा।''

बच्चे यह सुनकर घबरा गए पर राजा बोला– ''चिंता को कोई बात नहीं हैं किले की दीवारें बहुत मजबूत हैं हम सब सुरक्षित रहेंगे। पर सारा राशन तो हमारे महल में जन्मदिन की दावत में ही सब खत्म हो गया हैं। आज ही मैं खाने पीने का सामान मंगवाने वाला था पर अब तो कई बाहर भी नहीं जा सकता।''

राजा कुछ चिंतित स्वर में बोला।

बच्चे यह सुनकर घबरा गए पर डर के मारे कुछ नहीं बोले और चुपचाप वहीं बैठ गए।

दिन तो किसी तरह निकल गया पर शाम होते ही उनकी आंतें भूख से कुलबुलाने लगी और वे घबराकर रोने लगे।

राजा उनकी यह हालत देखकर बहुत दुखी था पर वो कर भी क्या सकता था इसलिए वह भी बिना खाए पिए चुपचाप उनके साथ बैठा था। जब रात गहराने लगी तो बच्चों की आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा और वे जोर से रोते हुए खाने के लिए बिलबिलाने लगे।''

तभी एक बच्चे को कुछ याद आया और वह खुशी से चिल्लाया – ''अरे हम भी तो अपने साथ दो दिन पहले राजा को देने के लिए नमकीन पूड़ियाँ लाये थे जो हमने कूड़े में फेंक दी थीं।''

उसके इतना कहते ही सभी बच्चों के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ पड़ी और वो कूड़ेदान की तरफ दौड़ पड़े।''

यह देखकर राजा ने कुछ इशारा किया जिसे देखकर उसके सेवक बच्चों का रास्ता रोककर खड़े हो गए।

बच्चों ने सकपका कर राजा की ओर देखा तो राजा बोला– ''पर तुम लोगों ने तो बहुत खुशी खुशी वो पूड़ियाँ फेंक दी थी और दो दिनों तक महल में भी खाने

की बहुत बर्बादी करते रहे पर अब तुम दो दिन पहले की बासी पूडी वह भी कूड़ेदान से निकालकर खाने को तैयार हो गए हो। मैं तुम्हें बासी खाना खाने नहीं दूंगा।''

यह सुनते ही बच्चों के चेहरे दर्द से तड़प उठे ऐसा लगा कि उनसे अब उनका आखिरी सहारा भी छीन लिया गया हो।

बच्चों की रुलाई फूट गई और वे कातर नजरों से राजा की ओर देखने लगे। तभी एक बच्चा आगे आकर बोला– ''पर अब अगर हमें भोजन नहीं मिला तो हम सब भूख से मर जायेंगे और अपनी माँ से भी नहीं मिल पायेंगे।''

यह सुनकर राजा की आखें नम हो गई और उसने उस बच्चे को गोद में उठाते हुए प्यार से कहा– ''पर क्या तुम सबने एक बार भी सोचा कि जितना भोजन तुम थाली में फेंक देते हो या बर्बाद कर देते हो उससे ना जाने कितने लोग अपना पेट भर सकते हैं। जिन पूड़ियों को फेंकने में तुम्हें जरा सा भी दुःख नहीं हुआ उसमें तुम्हारा सारा गाँव एक समय का भोजन आराम से कर सकता था।''

यह सुनकर बच्चों की नजरे शर्म से नीची हो गई और उनके चेहरे पर पश्चाताप के भाव झलक उठे। उन्हें अपनी गलती का इतना पछतावा हो रहा था कि वो दुःख के मारे राजा से माफी भी नहीं मांग पा रहे थे।

जब राजा को उनके गले तक बहते आँसू देखे तो वह तुरंत समझ गया कि बच्चों को उनकी गलती समझ में आ गई हैं और वो कभी भी अन्न की बर्बादी नहीं करेंगे।

राजा ने अपने सेवकों को इशारा किया और पल भर में ही वहाँ ढेरों पकवान मेज पर सज गए।

बच्चों का मन कर रहा था कि हमेशा कि तरह वो भोजन पर टूट पड़े। पर सब सिर झुकाकर राजा की तरफ देख रहे थे।

राजा मुस्कुराते हुए बोला– ''चलो बच्चो, जल्दी से खाना शुरु करो।''

यह सुनते ही सबने बड़े ही सलीके से थोड़ा–थोड़ा खाना अपनी थाली में परोसा, जिससे बिलकुल भी बर्बादी ना हो।

और फिर उन्होंने धीरे से राजा की ओर देखा जो मंद मंद मुस्कुरा रहा था।

अचानक राजा बोला– ''मेरे जन्मदिन का सबसे बड़ा उपहार तुम लोगों ने मुझे दे दिया हैं। मैं यह देखकर बहुत खुश हूँ कि तुमने भूख को देखने और महसूस करने के बाद अन्न की बर्बादी करना छोड़ दिया है।''

तभी राजा कुछ सोचते हुए बोला– ''पर मांदु, तुम मेरे लिए एक छोटे से थैले में क्या उपहार लाये थे। तुमने मुझे अभी तक वह नहीं दिया?''

यह सुनकर मांदु फुर्ती से उठा ओर राजा के हाथों में थैला पकड़ा दिया।

राजा ने उत्सुकता से थैले मैं हाथ डालकर देखा तो उसमें कई तरह के बीज थे। मांदु बोला– ''इन बीजों को बगीचे में बोने के बाद इनमें से बहुत खुबसूरत रंगबिरंगे फूल निकलेंगे, जिनकी खुशबू दूर–दूर तक जाएगी।''

यह सुनकर राजा ने खुशी से मांदु को गले लगाते हुए कहा– ''हम सभी अभी चलेंगे तुम्हारे इन बीजों को मिट्टी में डालने के लिए हम सब अपने जन्मदिन पर ढेर सारे फूल और पौधे भी लगायेंगे जिससे हमारा नगर हमेशा हरा–भरा और खूबसूरत बना रहेगा।

सभी बच्चों के चेहरों पर हँसी की लहर दौड़ गई ओर उन्होंने अपने मन में सोचा कि वे अपने सभी मित्रों को भी कहेंगे कि राजा के जन्मदिन न उन्हें किस प्रकार से एक नई सीख दी। जिससे उनके जीवन में एक नई रोशनी कि किरण ने दस्तक देकर उनकी अज्ञानता को हमेशा के लिए दूर तक दिया। वे हँसते और खिलखिलाते हुए राजा के साथ चल दिए, बगीचे की ओर उछलते और कूदते हुए ढेर सारे रंगबिरंगे फूलों को लगाने के लिए...

● **पानीपत (हरियाणा)**

|| राणा प्रताप जयंती : ७ जून ||

राणा प्रताप

कविता : डॉ. लीला मोदी

गौरव गाथा कण-कण गावे
भारत माता की माटी का।
वीर लहू से सींचकर निपजा
ये हीरा हल्दी घाटी का।।
मुंड कटे पर कंड लड़े
पीठों पर शत्रु घात करे।।
राणा अकेला बब्बर सा
झुंडों से दो दो हाथ करे।।
भाला प्रताप का रणचंडी
नागिन बिजली को मात करे।
संकट में झाला रूप धरे
दोनों के मन जजबात झरे।।
घायल चेतक उफना नाला
तीन टांग से पार करे।
दानी भामाशाह पूरा धन
राणा चरण उपहार धरे।।
न्यौछावर तन मन धन जीवन
हम बालक इस परिपाटी के
आई लो अपनी बारी है
अब कर्ज चुकावें माटी के।।

• कोटा (राज.)

|| कबीर जयंती : ज्येष्ठ पूर्णिमा ||

लहरताल

काव्य नाटिका : डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

(कबीर के भजन का गायन)
हिन्दू तुरकन लानों दोय
भक्ति द्रविड़ ऊपजी लाये रामानंद।
परगट किया कबीर ने सप्त द्वीप नौखण्ड।।

बालक – कौन कबीर? कहाँ ये आये
हिन्दू थे या मुसलमान थे।
या दक्षिण के भाग्यवान थे।।

माँ – सुन बेटा, कबीर मानव थे
हिन्दू और मुसलमान भी थे
प्रभु के भक्त सुधारक वे थे

बालक – कहाँ जन्म का घर था इनका
माता पिता कौन बड़भागी?
किसकी कृपा, कौन से क्षण में
इनमें भक्ति भावना जागी?

माँ – माँ ब्राह्मणी जन्मदायिनी थी
मगहर काशी जन्म हुआ था।
लहरताल में कमल पत्र पर
नीमा माँ को पुत्र मिला था।।

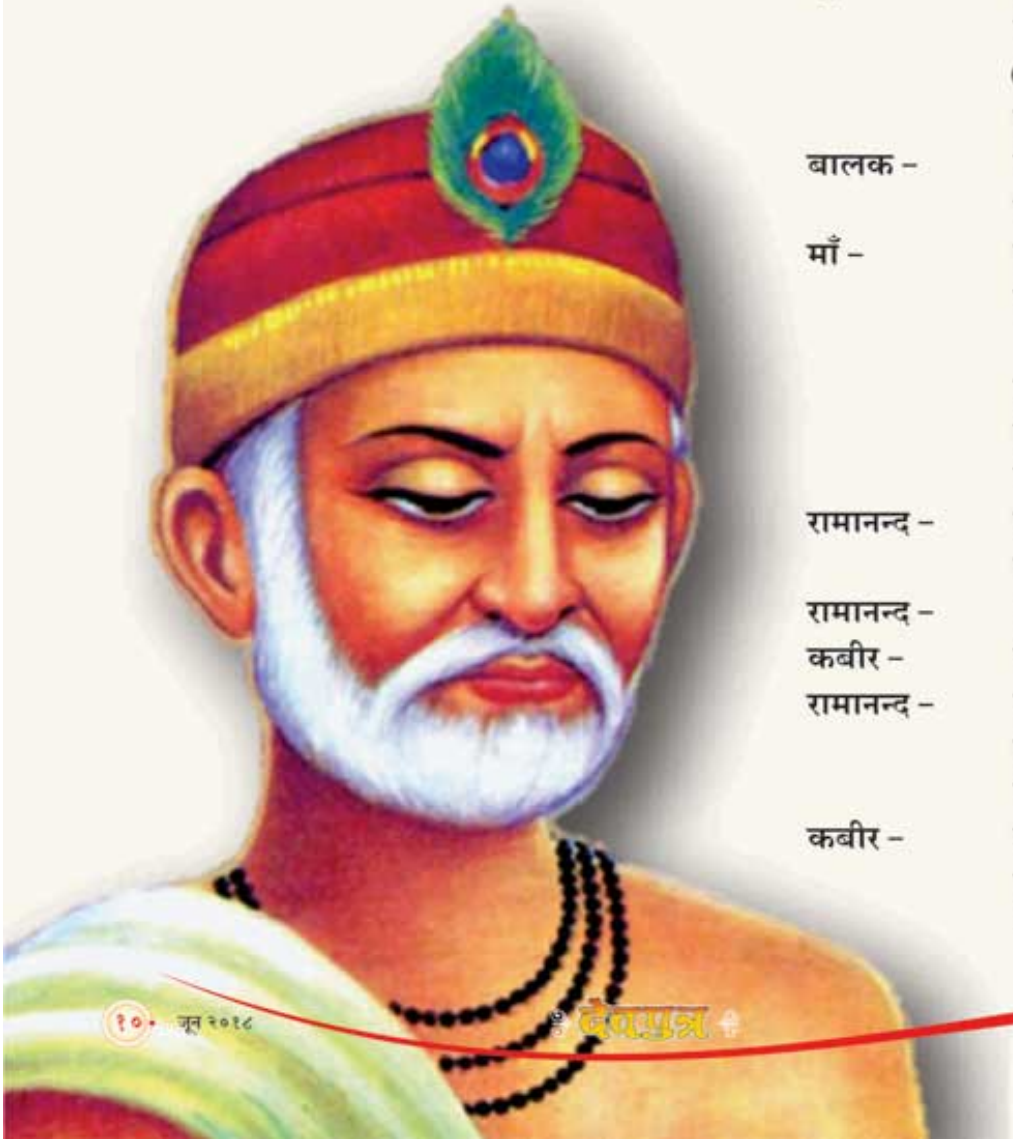

बालक – ऐसा क्यों माँ क्या दो माँ थी?

माँ – हाँ कुछ ऐसी ही घटना थी।
पहली जन्मदायिनी माँ थी।
दूजी पालनकर्त्री माँ थी।।

बालक – समझ गया मैं पले जुलाहे के घर वे थे

माँ – बुनते जाते वस्त्र और गाते जाते गीत
सदा वे थे।।

(नैपथ्य में गायन)
झीनी झीनी बीनी चदरिया...

बालक – कौन गुरु थे, किसने इनको शास्त्र पढ़ाया?

माँ – पढ़े लिखे थे नहीं, घूम कर ज्ञान बढ़ाया।।

द्वितीय अंक

एक दिवस गंगा के तट पर
लैटे सीढ़ी पर ले करवट।।
टक् टक् टक् (ध्वनि)

रामानन्द – राम राम राम राम
राम राम राम राम (दुहराना)

रामानन्द – अरे कौन तू?

कबीर – मैं कबीर हूं।

रामानन्द – नहीं जानता क्यों लेटा है
बोला कहाँ से आया है तू?
किस माँ का प्रिय बेटा है तू?

कबीर – जात पाँत पूछे नहिं कोई।
हरि को भजे सौ हरि को होई।
आप गुरु में शिष्य बन गया।

का कमल

राम नाम का मंत्र मिल गया।।

(नैपथ्य में)

बलिहारी गुरू आपणें दियो हाड़ी यकौ बार।
जिन मानुष तैं देवता, करत न लायी बार।।
सतगुरु की महिमा अनत, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावनहार।।
कबीर कूता राम का, मुतिया मेरा नाऊं।
गले राम की जेवड़ी, नित खैंचों तित जाऊँ।।

वाचक – दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
इनके राम, मरम है आना।।

वाचिका – परब्रह्म थे इनके राम।
निराकार वे इनके राम।।
एक हुयै थे राम रहीम।
एक हुये थे कृष्ण करीम।।

वाचक – दो आँखे दो सम्प्रदाय थे।

वाचिका – दोनों धर्म समान भाव थे।।

(नैपथ्य में)

कंकड़ पत्थर जौरि के मस्जिद लई चिनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे क्या बहरा हुआ खुदाय।
पाहन पूजै हरि मिलें, तौ मैं पूजौं पहार।
या तै तो चाकी भली, पीस खाय संसार।।

वाचक – दोनों ही मत आये पास।
फैली चारों और सुवास।।
वे थे कर्मशील पर योगी।
परमात्मा के प्रेम–वियोगी।।

वाचिका– इनके नीति वचन संचय है।
सबके पथदर्शक निश्चय है।।

(नैपथ्य में)

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जैहि रुचे, सीस देये लै जाय।।
कबीर कहता जात हूं, सुणता है बस कोय।
राम कहै भला होयगा, नहिंतर भला न होय।।

वाचक – लौंई पतिव्रता पत्नी थी,
प्यारा पुत्र कमाल।
यात्रा करते करघा बुनते, बीत गये कुछ साल।।

(नैपथ्य में)

बीत गये दिन भजन बिना रे।
बाल्य अवस्था खैलि गँवाई
जब जौबन तब मान घनारै।।
नाहीं कारन भूल गँवायो
अजहुँ न गई मन की त्रिसना रे।।
कहत कबीर सुनौ भाई साधौ,
पार उतरि गयै संत जना रे।।

वाचिका – अन्त समय जब आय इनका
दिया एकता का संदेश।
अनुयायी संतों ने देखा,
हुई फूल अस्थियाँ निशेष।।

वाचक – खुद काँटों में पले, दे दिये
जग को खिलते हँसते फूल।
अब भी उनकी वाणी हरती
दुःखीजनों के तीखे शूल।।

● नोएडा (उ.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

पर्यावरण

कविता : गार्गी जमड़ा

पर्यावरण को स्वच्छ बनाएं
पेड़ न काटे न कटवाएं।

सफाई हम सब करे हमेशा
जोड़कर एक-एक पैसा
सुंदर-सुंदर गमले लाएं
उसमें सुंदर पौधे उगाए।

कूड़ा-कचरा नहीं करें हम
मिटा गंदगी फिर ही लें दम
स्वच्छ भारत की योजना बनाएं
स्वच्छता का त्यौहार मनाएं।

● जावरा (म.प्र.)

खम्बा

।। प्रसंगः पुष्पेश कुमार ।।

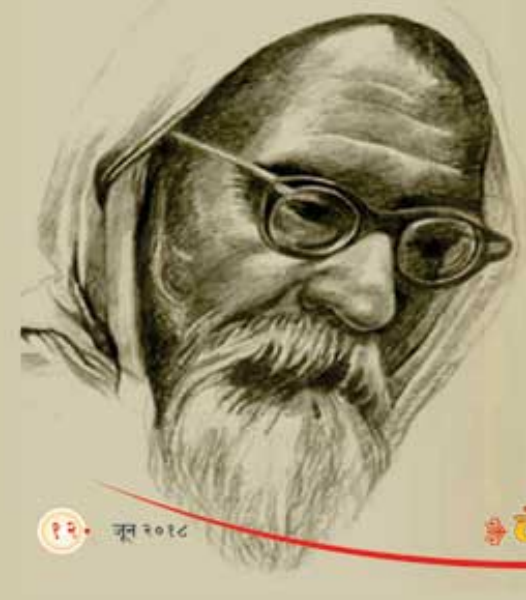

एक शराबी व्यक्ति आचार्य विनोबा भावे के पास गया और बोला- ''मुझे कोई ऐसा उपाय बताइये, जिससे मेरी शराब पीने की आदत छूट जाए।'' विनोबा भावे ने उसे अगले दिन आने को कहा और साथ ही यह भी चेतावनी दे दी कि वह उन्हें कमरे के बाहर से ही आवाज दे।

अगले दिन वह व्यक्ति कमरे के बाहर से ही विनोबा जी को पुकारने लगा। विनोबा जी ने कहा- '' मैं बाहर कैसे आऊं, मुझे खंबा जो पकड़े हुए है!'' उस आदमी ने कहा- ''आप अपना हाथ खंभा से हटा लीजिए, खंभा सजीव थोड़े ही है।'' विनोबा जी ने शीघ्र ही खंबे को छोड़ दिया और बोले- '' क्या शराब सजीव है? जिस प्रकार खंबा छोड़ना मेरे हाथ की बात है, उसी प्रकार शराब की लत छोड़ना तुम्हारे वश की बात है। यदि तुम दृढ़ निश्चय करो तो शराब छोड़ना तुम्हारे अपने हाथ की बात है।''

● बाढ़ (बिहार)

कविता : पूनम पाण्डे

योग गुरु

जुगनू अब नवीं कक्षा में आ गया था। उसकी माँ यों तो उससे नाराज नहीं रहती थी क्योंकि वह न तो मुँहफट था ना ही आवारा, यहाँ तक कि पढ़ाई के मामले में भी गम्भीर था। पर एक चिन्ता थी जो माँ को दिन रात बहुत तंग कर रही थी। जुगनू का वजन पिछले साल से काफी अधिक बढ़ गया था। माँ ने उसे एक सप्ताह के लिए योग–प्राणायाम आदि का उत्तम प्रशिक्षण भी करवाया था और योग प्रशिक्षक ने यह कहा भी था ''अगर जुगनू नियमित रूप से मात्र बीस मिनिट भी यह आसन आदि करेगा तो उसका वजन नहीं बढ़ेगा। उसकी याददाश्त बहुत बढ़िया रहेगी। उसका शरीर सोने की तरह दमक उठेगा।''

उस समय माँ को यह बातें इतनी अच्छी लगीं थी कि वह इन सब बातों की कल्पना मन ही मन करके एकदम उत्साहित–सी हो चलीं थीं। पर यह उत्साह कढ़ी के उबाल जैसा ठण्डा हुआ और फिक्र में बदल गया। जुगनू का मोटापा, उसके आलस व चिड़चिड़ेपन के लिए भी जिम्मेदार था। माँ ने एक दिन एक उपाय सोचा और उसे आजमाने के लिए जुगनू से एक विनती की। माँ ने कहा ''हर शाम को मात्र तीस मिनट का समय निकालकर अगर वह माली काका और दूध वाले भैया के बच्चे को कुछ अच्छे आसन सिखा देगा तो वह उसे उसकी पसंदीदा भिण्डी, कढी और लौकी के कोफ्ते बनाकर खिलाएगी।'' माँ की पूरी बात जुगनू ने गौर से सुनी। माँ ने कोई कठिन काम नहीं दिया था। शाम को इतना समय निकालना कोई पहाड़ तोड़ने वाली असम्भव बात नहीं थी। वैसे भी वो सारे आसन बखूबी जानता था और फिर गुरु बनकर सिखाने की तो बात ही अनूठी थी। एक और लाभ था माँ हर दिन एक पसंदीदा व्यंजन पकाकर खिलाने वाली थी। जुगनू ने देर नहीं की चट से हामी भर दी। अब माँ ने मन ही मन प्रार्थना की कि जुगनू प्राणायाम आसन सिखाने के अपने प्रयास में सफल रहे। अब अगर दुआ माँ ने की थी तो भला सफल क्यों न होती?

साथ ही जो बच्चे सीखने आ रहे थे अब उनमें कपड़े प्रेस करने वाली काकी के बच्चे, चाय वाले भैया के बच्चे भी शामिल हो गए। करीब एक दो महीने में तो एकदम ही कमाल होने लगा था। पूरी कॉलोनी जुगनू के सरल, सहज व्यवहार की प्रशंसा करते थे। एक दिन पड़ोस पत्रकार चटर्जी जी ने भी उस सामूहिक योगासन का चित्र अखबार में छपवा दिया। कुदरत का क्या चमत्कार हो रहा था। माँ नए नए पकवान पका रही थीं। जुगनू का वजन कम हो रहा था। अब यह उसकी जीवन शैली बन रहा था। कहाँ तो एक दिन मात्र चार बच्चे थे जो जुगनू के साथ प्राणायाम करते थे अब तो कॉलोनी का हरी दूब से लकदक पूरा मैदान उन लोगों से भर जाता जो रोज वहाँ योगाभ्यास कर रहे थे। माँ का सपना बहुत सुन्दर ढंग से साकार हो गया।

● कोटड़ा (राज.)

छोटे से बड़ा

योग दिवस पर लीन ध्यान में बैठी बिटिया रानी।
छोटी से तस्वीर कौनसी बड़ी है तुम्हें बतानी।।

(उत्तर इसी अंक में)

पौधे ने कहा

चित्रकथा - देवांशु वत्स

मन का प्रदूषण

कहानी : राजेश मेहरा

''चलो राजू जल्दी करो तुम्हारी बस छूट जाएगी'' राजू के पिताजी ने अपना कुर्ता पहनते हुए कहा।

''अपने मास्क भी पहन लेना'' उन्होंने आगे कहा और वे फिर मन ही मन बड़बड़ाने लगे ''ये प्रदूषण तो जान लेकर रहेगा हम लोगों की?''

राजू तुरंत अन्दर के कमरे से बाहर आया, उसके मुँह पर मास्क भी था। राजू के पिताजी ने भी मास्क लगाया और वे दोनों राजू की माँ को नमस्कार कर तेजी से बाहर निकल गए।

राजू के पिताजी रोज उसे कालोनी के बाहर उसके विद्यालय की बस तक छोड़ने आते थे और उसके बाद वे अपने कार्यालय निकल जाते थे। विद्यालय बस स्टैण्ड कॉलोनी से थोड़ा दूर था। वो लोग जब बस स्टैण्ड के नजदीक पहुंचे तो देखा की वहां पर हल्ला मच रहा था और कुछ गरीब लोग खुले मैदान में एक छोटे से बच्चे को घेरे हुए हैं। ये सब देख कौतूहलवश राजू ने अपने पिताजी का हाथ छोड़ा और तेजी से वहाँ पहुँच। वहाँ उसने देखा कि एक छोटा बच्चा नीचे लेटा है। उसे साँस लेने में तकलीफ हो रही है और उसकी माँ बार बार कह रही है ''कोई कुछ करो इसे बचा लो।'' तब तक राजू के पिताजी भी आ गए थे, ये सब देख उन्होंने अनदेखा कर दिया और राजू को कहा कि चलो तुम्हारी बस आ गई है। राजू ने अपने पिताजी से उनकी मदद करने को कहा तो उसके पिताजी बोले– ''राजू, हम कब तक किसी अंजान की मदद करते रहेंगे।'' राजू बोला–''पिताजी, यदि हम इस छोटे से बच्चे को अपने घर के एयर प्यूरिफायर के पास ले जाएंगे तो इसकी सांस ठीक हो सकती है क्योंकि इसे इस गहरे प्रदूषण की वजह से सांस लेने में तकलीफ हो रही है।' लेकिन उसके पिताजी ने एक नहीं सुनी ओर उसे डांट कर विद्यालय की बस में बैठा दिया। वे अपने कार्यालय चले गए।

राजू का मन बिलकुल खराब था, उसका विद्यालय में भी पढ़ाई में मन नहीं लगा। उसे इस प्रदूषण पर गुस्सा आ रहा था जिसकी वजह से वह बेचारा छोटा बच्चा सांस नहीं ले पा रहा था।

किसी तरह से राजू ने अपना समय काटा उसे अभी भी उस छोटे बच्चे की चिंता थी। वह उसे देखना चाहता था।

विद्यालय की छुट्टी के बाद वापिस जब अपने बस स्टैण्ड पर उतरा तो देखा की वे गरीब लोग अभी भी वहीं थे और अब तो उस बच्चे की माँ जोर से रो रही थीं क्योंकि वह बच्चा सांस मुश्किल से ले पा रहा था। राजू से ये सब देखा नहीं गया। उसने उस बच्चे की माँ को अपने साथ चलने को कहा पहले तो वे थोड़ी

सकपकाई लेकिन बाद में उसने अपने आंसू पोंछे और अपने बच्चे को लेकर राजू के साथ चल दी।

राजू उन्हें लेकर अपने घर पहुंचा। राजू की माँ ने दरवाजा खोला और राजू के साथ उस औरत को देख कुछ कहती, उससे पहले ही राजू ने जल्दी से उन्हें सारी बात बता दी। राजू उस छोटे बच्चे को उसकी माँ सहित अपने एयर प्यूरिफायर वाले कमरे में ले गया। शुद्ध हवा मिलते ही बच्चा आराम से सांस लेने लगा। राजू की माँ ने डाक्टर को बुलाया और उसे दवाई भी दिलवा दी। थोड़ी देर में बच्चा खेलने लगा। अब राजू खुश था और उस बच्चे की माँ भी। राजू ने अपनी माँ से लिपट कर उन्हें धन्यवाद कहा। उस बच्चे की माँ ने राजू को आशीर्वाद दिया और राजू के माँ के आगे हाथ जोड़ दिए। उस बच्चे की माँ जब जाने लगी तो राजू ने उन्हें दस मास्क दिए और बच्चे को हमेशा लगा कर रखने को कहा। उस बच्चे की माँ मुस्कुराती हुई चली गई। वह छोटा बच्चा भी मास्क लगाकर सांस आराम से ले रहा था।

शाम को राजू के पिताजी उसी मैदान से गुजरे तो उस छोटे बच्चे की माँ उनके सामने हाथ जोड़ते हुए बोली ''आप बड़े किस्मत वाले हो कि आपको राजू जैसा बेटा मिला।'' उसने सारी कहानी सुनाई और वापिस अपने बच्चे के पास चली गई। वो छोटा बच्चा अब मास्क लगा कर आराम से खेल रहा था। राजू के पिताजी को अब आत्मग्लानि हो रही थी और अपने बेटे राजू पर गर्व भी हो रहा था। अब धीरे–धीरे वह प्रदूषण कम हो रहा था और उनके मन का प्रदूषण भी छँट गया था। वो अब जल्दी से घर जाकर राजू को प्यार करना चाहते थे। ●

संस्कृति प्रश्नमाला

- *महाराजा जनक किस प्रदेश के राजा थे?*
- *महाभारत के युद्ध में कौरवों की ओर से युद्ध करने वाले प्रागज्योतिषपुर (असम) के वे राजा कौन थे जो गज-युद्ध में बड़े कुशल थे?*
- *इन्द्रप्रस्थ में पाण्डवों का राजभवन बनाने वाला भवन निर्माता मय दानव वर्तमान उत्तरी अमरीका के किस देश का निवासी था?*
- *तमिलनाडु की किस प्रसिद्ध नगरी को दक्षिण की काशी कहा जाता है?*
- *जन्म से ब्राह्मण किन्तु कर्म से क्षत्रिय ऐसे चिरजीवी (अमर) माने जाने वाले महापुरुष कौन हैं?*
- *किस गणराज्य से युद्ध के समय यूनानी सिकन्दर घायल हो स्वदेश पहुंचने से पहले ही मृत्यु को प्राप्त हुआ था?*
- *ग्रह-नक्षत्रों के अध्ययन के लिए आचार्य वराह मिहिर ने दिल्ली में स्थित जो वेधशाला बनाई थी उसे इन दिनों किस नाम से जाना जाता है?*
- *१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की योजना नाना साहब पेशवा, तात्या टोपे, रंगोबापू जी तथा अजीमुल्ला खान ने बनाई थी। किस स्थान पर सम्पूर्ण योजना बनाई गई?*
- *राजस्थान के किस नगर के जमीनी दुर्ग को लोहागढ़ नाम से जाना जाता है?*
- *बेल्जियम के वे विद्वान कौन है जो अयोध्या में श्रीराम मंदिर बनाने के समर्थक हैं?*

(उत्तर इसी अंक में) (साभार : पाथेय कण)

एक पत्र अपने बेटे के नाम

कविता : जगदीश तोमर

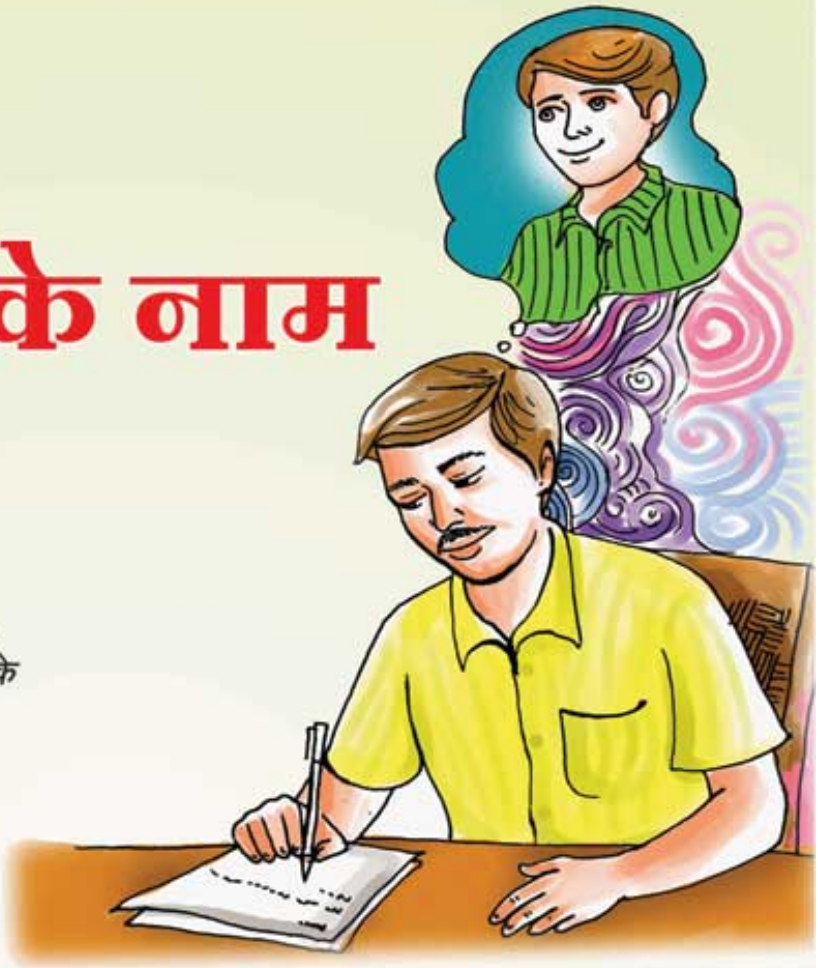

मेरे बेटे, जब तुम जन्मे
सूर्य उगा था नया तेज ले
ओर आज वह काफी ऊंचे पहुंच चुका है,
तुम भी जो बचपन की चौखट पार कर चुके
और खड़े हो द्वार कर्म के
रोम रोम में हिरणों की चुस्ती उमंग ले
आँखों में ले स्वप्न सुनहले
कसे मुट्ठियाँ, सीना ताने।
मेरे बेटे, इस क्षण मेरे
अन्तस से नव फूट रहे हैं
मंगलमय शुभ गीत सुहाने।

है मेरा विश्वास सदा तुम
सत्यपंथ पर कदम रखोगे,
सदा सत्य के लिए जियोगे
सुख सुविधाओं की खातिर तुम
कभी नहीं उसको छोड़ोगे।
कभी नही उसको छोड़ोगे।

एक बात का ध्यान सदा तुम रखना,
गलत बात के लिए कभी मत झुकना,
और पड़ा हो स्वर्ण, कीमती मोती
पर बेटे तुम, उसे न झुककर कभी उठाना
झुककर बेटे कभी न कोई लाभ कमाना।

मेरे बेटे,
हरदम श्रम का संबल लेना
गिर जाने पर फिर उठ पड़ना
चलते बढ़ते जाना
पथ में कहीं न रुकना।

तुमको सुख उल्लास मिले, इसलिए दिशायें
नित नव मंगलदीप जलायें, फूल खिलायें।
और तुम्हारे जीवन पथ पर
सदा जुड़ें आलोक –सभायें।
तुम माता के चरणों की रज सिर पर रखना,
सत्य प्रेम की ज्योति थामकर उसकी सेवा करना।
मेरे बेटे मुझको तुमसे इस क्षण बस इतना ही कहना।
ध्यान सदा उस पर तुम रखना।।

● ग्वालियर (म.प्र.)

|| विश्व योग दिवस : २१ जून ||

योग साधना

कविता : डॉ. विनोदचंद्र पाण्डेय 'विनोद'

हम सब लोग योग अपनायें।
सभी योग की महिमा गायें।।

सबके लिए योग हितकारी।
सबके लिए योग गुणकारी।।
सबके लिए योग उपयोगी
सभी योग का लाभ उठायें।।

हम सब लोग योग अपनायें।।
योग सभी को स्वस्थ बनाता।
योग नई चेतना जगाता।।
योग दीर्घ जीवी करता है।
सब अनुभवी यही बतलाएँ।
हम सब लोग योग अपनाएँ।।

तन हो स्वस्थ, स्वस्थ निज मन हो।।
स्वस्थ सबल सुखमय जीवन हो।।
हो न किसी की काया रोगी,
हम रोगों को दूर भगायें।
हम सब लोग योग अपनायें।।

आसन, प्राणायाम करें हम।
शारीरिक व्यायाम करें हम।
अनुशासित संयमित रहें नित,
सीखें योग, योग सिखलायें।
हम सब लोग योग अपनायें।।

• लखनऊ (उ.प्र.)

योगासन

कविता : डॉ. वेद मित्र शुक्ल

सुबह-सबेरे योग करेंगे
आज करें प्रण आओ बच्चो,
योगासन हैं भांति-भांति के
सीखो और सिखाओ बच्चो।
स्वच्छ हवा में साफ जगह पर
गहरी-गहरी सांसें लेंगे,
पद्मासन या ताड़ासन हो
तन-मन में ऊर्जा भर देंगे।
कभी खड़े हो, कभी लेट कर
कभी बैठ करते आसन,
रोज-रोज अभ्यास करें तो
कष्टों को हरते योगासन।
ऋषि-मुनियों की देन योग है
जीवन रहे निरोगी बच्चो,
सारी दुनिया ने माना है
योग बड़ा उपयोगी बच्चो।

• नई दिल्ली

बन्धन-मुक्त

'कम्बख्तो, नमकहरामो, शिवाजी कैदखाने से बाहर चला गया और तुम सब पहरा ही देते रह गये।' औरंगजेब शिवाजी महाराज के इस करिश्मे से परेशान होकर अपना सिर पीटने लगा। बार-बार अल्लाह की याद करता है और कहता – 'हे मालिक, तूने यह क्या किया? घर आया शिकार हाथ से निकल गया। चोट खाये सांप से अधिक खूंखार होकर शिवाजी खून-खराबी करेगा। कौन बचा पायेगा अब मुगल सल्तनत को उसकी तलवार की मार से।'

औरंगजेब यह जानने के लिए बेचैन था कि आखिर शिवाजी आगरे के किले से बाहर गये कैसे? कड़ा पहरा और बन्द कोठरी। हवा का झोंका भी बिना जानकारी के आ जा नहीं सकता। फौलाद खाँ से जो शिवाजी के चले जाने सम्बन्धी सूचना लेकर आया था- कड़क कर बोला- ''नमक हराम! उस समय तू कहाँ था? क्या कर रहा था?'' फौलाद खाँ बादशाह का गुस्सा देखकर ऐसे कांप रहा था मानों उसे जूड़ी हो गई हो। बोला- ''खता माफ हो जहाँपनाह, वह भागा नहीं, लगता है उड़ गया। हवा के किसी झोंके में उसकी रूह समा गयीं। भागना तो एकदम नामुमकिन था गरीब परवर।''

फौलाद खाँ कुछ और कहता कि औरंगजेब रामसिंह की ओर झटके से मुड़ा- ''और तुम कहां थे?'' रामसिंह बिना उत्तर दिये चुपचाप सिर नीचा किये पैर के अंगूठे से जमीन कुरेदते रहे। औरंगजेब का गुस्सा और जोर से भभका-''बेईमानो, धोखेबाजो, वह उड़ा नहीं है जमींदोज हो गया- जमीन के नीचे नीचे ही निकल गया और तुम ऊपर-ऊपर पहरा ही देते रह गये।''

फौलाद खां ने हिम्मत करके आँखें ऊपर उठाईं तो औरंगजेब और जोर से चीखा- ''क्या देख रहे हो, मेरी खूबसूरती? देख लो, देख लो, मेरा मुँह देख लो, अरे बेगैरतो, जाओ-भागो यहां से। उसका पीछा करो। पूरे शहर को घेर लो, दूर-दूर तक घुड़सवार दौड़ा दो, जैसे भी हो जिन्दा या मुर्दा उसे पकड़ कर लाओ। वरना तुम सभी का सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा।''

रामसिंह और फौलाद खाँ दोनों ने वहां से हट जाने में ही खैर समझा। चारों ओर घुड़सवार दौड़ाये गए। दक्षिण की ओर विशेष निगरानी का हुक्म दिया गया। सारे आगरा में एक ही चर्चा, शिवाजी औरंगजेब और उसके पहरेदारों की आँखों में धूल झोंक कर भाग निकला। चौराहों और बाजारों में खुसफुस होने लगी- अरे वह इंसान नहीं फरिश्ता है। शिवाजी शिवजी का अवतार हैं- बमभोला चला गया, सिपाही निगरानी ही करते रह गए। औरंगजेब के चापलूस दरबारी उसे घेर कर बैठ गये। कहने लगे- ''जहाँपनाह उसे ढाका बंगाला आता है। वह जादूगर है जादूगर। जब जहाँ चाहे, पहुंच सकता है। दक्षिण में ऐसी कहावतें हैं कि शिवाजी एक ही समय सभी किलों और इलाकों में घूमते देखा जाता है। वह कभी भी कही भी पहुंच सकता है।''

'या अल्लाह!' तब तो वह यहाँ महल में भी आ सकता है- रास-बिरात कभी भी परेशान कर सकता है।'' दूसरे ने कहा।

औरंगजेब की हिफाजत के लिए भी इन्तजाम कड़ा कर दिया गया।

जब शाही दरबार से शिवाजी गुस्से में वापस चले गये- औरगंजेब की मनसबदारी आपस करके स्वतंत्र होने की घोषणा कर दी तो औरंगजेब पहले तो बहुत कुपित हुआ फिर सोचा कि मौका अच्छा है शिवाजी का खात्मा कर देना चाहिए। किसी उपयुक्त अवसर और उचित बहाने की खोज करने के लिए उसने शिवाजी को धर्मशाला से हटाकर आगरा के किले में विधिवत् कैद कर दिया और पहरेदारों को कड़ी हिदायत दी गई कि वे कभी भी गाफिल न हों, वरना इसकी एक ही सजा होगी- मौत।

१२ मई १६६६ की घटना के बाद १३ मई को शिवाजी को रामसिंह ने समझा-बुझा कर इस बात के लिए तैयार कर लिया कि यदि आप दरबार में नही जाना चाहते तो शम्भा जी को ही भेज दें। बुलाने तो वे आये थे शिवाजी को लेकिन दरबार में लौटे साथ में लेकर शम्भा जी को। औरंगजेब तड़प उठा-''क्या शिवाजी नहीं आयेगा, उसने आने से इन्कार कर दिया?'' रामसिंह संयत होकर संभल कर बोले-''जहांपनाह, शिवाजी आने के काबिल नहीं है। वे बहुत ही गंभीर रूप से बीमार हैं तेज बुखार में उनका शरीर तप रहा है।''

''हूँ'' बादशाह मुस्कराया फिर तेवर चढ़ाकर शम्भा जी की ओर देखा- ''ठीक है-ठीक है'' बालक शम्भा जी की मुठ्ठियां बंध गयीं, गुस्से में होंठ भिंच गये, किन्तु रामसिंह ने स्थिति संभाल ली। औरंगजेब ने बालक शम्भा जी का स्वागत किया। उन्हें उसने सिरोपा, मणिमाल्य और एक कटार देकर विदा दिया।

इधर, शिवाजी के विरुद्ध औरंगजेब के कान भरने का काम तेजी से चल रहा था। जसवंत सिंह ने तो जो भला-बुरा कहा वह तो ही, औरंगजेब की बहन जहांआरा बेगम न जाने क्यों शिवाजी पर आग बबूला हो उठी थी। उसने कहा-''आप बादशाह है। मुगल खानदान और तख्त की इज्जत आप के हाथों में है। शिवाजी सरीखा एक अदना सा आदमी दरबार की तौहीन करके चला गया और आप देखते रहे। इतना ही नहीं तो उसके लड़के की इज्जत आफजाई करके आपने यह भी दिखा दिया कि आप शिवाजी से डरते हैं। आप खामोश क्यों हैं? क्या आप के दिलो दिमाग को लकवा मार गया है। शिकार सामने है और आप चुपचाप बैठे हैं।''

इसी बीच शाइस्ता खां का साला जफर खां भी आ पहुंचा। उसने दलीलें देते हुए कहा- ''जहांपनाह, मुगल सल्तनत को महफूज (सुरक्षित) रखना है तो इसका एक ही रास्ता है कि शिवाजी का खात्मा कर दिया जाए।''

औरंगजेब १६ मई १६६६ को दिनभर इसी तरह सलाहमशविरा करता रहा और अन्त में कोतवाल फौलाद खां के नाम फरमान जारी कर दिया कि शिवाजी को किलेदार राज अन्दाज खां के पास पहुंचा दिया जाए। इसका मतलब यह था कि अब शिवाजी का कत्ल करने की कार्रवाई शुरु हो गयी।

किन्तु इसी बीच एक नयी बाधा खड़ी हो गयी। रामसिंह को जब यह पता चला कि शिवाजी को राज अन्दाज के हवाले करने का हुक्म हो गया है तो उसका खून खौल उठा। वह सीधे मुगलशाए सल्तनत के मुखिया मीर बख्शी मुहम्मद अमीन खान के घर गया। रामसिंह गुस्से में था, उसने कड़क कर कहा- ''मैं यह सब नहीं होने दूँगा। शिवाजी को मैं राजअन्दाज खान के हाथों में सौंपने नहीं दूंगा। मैं राजपूत हूँ। शिवाजी की सुरक्षा के लिए हम वचनबद्ध हैं। मैं हर कीमत चुका कर अपने पिता के वचनों को पूरा करूँगा। शिवाजी को कत्ल करने के पूर्व बादशाह को मेरा कत्ल करना होगा।''

अमीन खाँ घबरा गया। वह सीधे शाही दरबार पहुंचा। बादशाह सलामत के हुजूर में पहुंच कर उसने अर्ज की-''जहाँपनाह! अगर शिवाजी की राज अन्दाज खाँ ने हत्या कर दी तो गजब हो जाएगा।'' रामसिंह के साथ अपनी भेंट का हवाला देते हुए उसने कहा- ''राजपूत है। अपने वचनों को पूरा करने के लिए हर तरह की कुर्बानी दे सकता है और अगर वह अड़ जाएगा तो मुगल सल्तनत

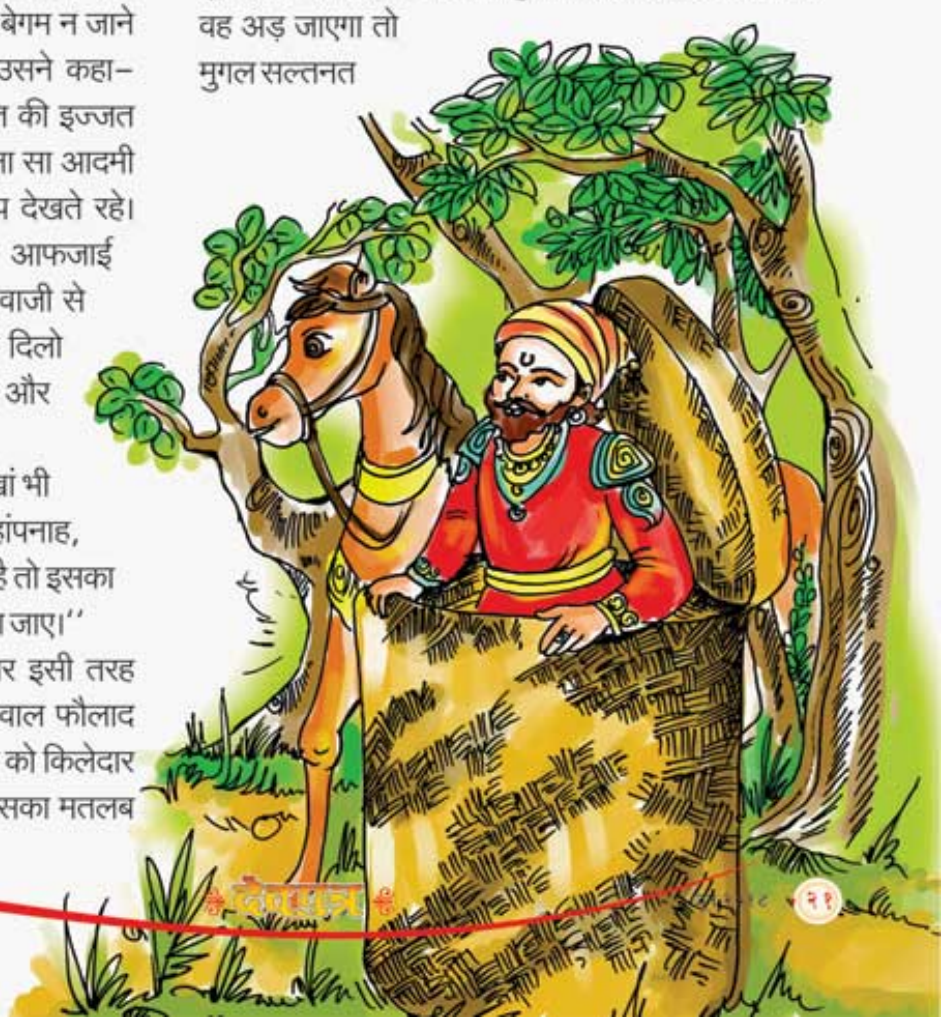

की चूलें टूट जाएगी। मिर्जा राज अभी दक्षिण में ही हैं। वे भी...।''

''बादशाह बीच में ही बोल उठा– ठीक है, ठीक है। मैं अपना फरमान वापस ले सकता हूं। किन्तु एक शर्त पर कि रामसिंह शिवाजी की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लें। अगर शिवाजी भाग निकला तो रामसिंह को इसी सजा भुगतनी होगी।''

यह शर्त अमीन खां ने रामसिंह को और रामसिंह ने जब शिवाजी को बताई तो शिवाजी के ध्यान में यह बात आ गई कि रामसिंह काम का आदमी है– बात का पक्का है। १७ मई १६६६ को रामसिंह के महल में पहुँच कर शिवाजी ने शिवलिंग की साक्षी में शपथपूर्वक यह कहा कि ''मैं भी वचन देता हूँ कि मैं यहां से भाग कर नहीं जाऊँगा।''

रामसिंह ने अमीन खां को लिखित आश्वासन दे दिया। औरंगजेब खुश हो गया। अभी दोनों बैठे राय–मशविरा कर ही रहे थे कि शाही खुफिया घबराये हुए दरबार में हाजिर हुए– ''जहाँपनाह, गुस्ताखी माफ हो। शिवाजी की हत्या करने का फरमान वापस ले लें। रियाया बागवत कर देगी। चारों ओर यह अफवाह है कि बादशाह शिवाजी का कत्ल कराने जा रहे हैं। जल्दी ही उसका खात्मा हो जाएगा। इलाके में राजपूत बेचैन हैं। वे इसे अपनी तौहीन समझ रहे हैं। यह मिर्जा राजा जयसिंह के हक में वादाखिलाफी होगी। मुगल सल्तनत के राजपूत सिपाही अपनी जान देकर भी शिवाजी को बचाने की सोच रहे है। मिर्जा राजा ने दरबार में भेजा है। दूसरे शिवाजी ही नहीं पूरी राजपूत कौम के साथ धोखा बताकर प्रचार किया जा रहा है। शिवाजी के कत्ल का मतलब होगा एक बहुत बड़ी बगावत जिसमें हिन्दू राजे, राजपूत सिपाही और सरदार एक ओर तथा मुट्ठीभर मुगल सिपाही दूसरी ओर होंगे।

यह सुनकर औरंगजेब घबराया। अमीन खां को हुक्म दिया कि मिर्जा राजा के पास मेरा खत भेज कर पूछा जाय कि उन्होंने शिवाजी को क्या वचन दिए हैं। मिर्जा राजा को पत्र भेज दिया गया। उत्तर का इंतजार किया जाने लगा।

इधर शिवाजी को समय मिल गया। उन्होंने मुगल सरदारों, विशेषकर राजपूतों से दोस्ती करना शुरु कर दिया। भेंट, उपहार, दावत जो जिस बात से खुश हो सकता था उसके लिए वैसा ही प्रबंध करने लगे।

एक दिन शिवाजी ने अमीनखान से मुलाकात की और उन्हें एक पत्र देकर कहा कि इसे बादशाह सल्तनत तक पहुचा दें। पत्र में लिखा था– ''यदि बादशाह मुझे घर जाने की इजाजत दे दें तो मैं अपने सारे किले और दो करोड़ रुपये देने के लिए तैयार हूं।''

लेकिन औरंगजेब भी कम चालक न था। उसने शिवाजी की मनसा समझ ली कि अब घर वापस जाने के लिए सोचने लगा है। उसने एक फरमान निकाल कर शिवाजी को नजरबंद कर दिया और उनसे भेंट, मुलाकात पर सख्त पाबंदी लगा दी। फौलाद खां की देखरेख में ५ हजार सिपाही शिवाजी निगरानी के लिए तैनात कर दिए गए।

अब शिवाजी पूरी तरह से बन्दी हो गए। तीन सप्ताह तक वे यह सोचने रहे कि अब क्या रास्त निकल सकता है। एक दिन उन्होंने कोतवाल फौलाद खां से कहा– ''आप बादशाह का फरमान दिला दें। मेरे साथी घर वापस जाना चाहते हैं।'' साथ ही, रामसिंह को भी संदेश भेजा कि वे बादशाह को बता दें कि अब शिवाजी की कोई जिम्मेदारी वे नहीं लेंगे–मेरी ओर से स्वयं को मुक्त कर लें।

औरंगजेब खुश था। उसने फरमान निकाल दिया कि शिवाजी के साथ अपने घर वापस जा सकते हैं। हुक्म मिलते ही सभी मराठा सैनिक निकल गए। शिवाजी ने केवल ७ व्यक्तियों को अपने पास रहने दिया।

औरंगजेब ने रामसिंह को भी शिवाजी की जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया। मिर्जा राजा ने भी पत्र लिखकर रामसिंह को ऐसी ही हिदायत दी थी। औरंगजेब ने शिवाजी का कत्ल करने की तैयारी तय कर दीं। फिदा–ई–हुसैन खान के नये महल में शिवाजी की हत्या करने की योजना बनी–उसी महल में उन्हें दफनाने का भी इंतजाम किया गया।

शिवाजी अपनी योजना का आखिरी चरण पूर्ण कर चुके थे। अब तक उसके वे ३०० विश्वस्त सैनिक जो आगरा के बादशाह का फरमान पाकर चले गए थे, अपने अपने ठिकानों तक पूर्व योजनानुसार पहुंच चुके थे और वे निर्देशित समय का इंतजार कर रहे थे।

इसी बची, शिवाजी की बीमारी शुरू हो गई। योजनाबद्ध रूप से यह निरन्तर बिगड़ती ही गई। 'मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों–ज्यों दवा की' उक्ति के अनुसार उन्हें किसी के इलाज

से कोई भी फायदा नहीं हुआ। खान-पान सब कुछ एकदम बन्द हो गया-खांसी के गंभीर दौरे आने शुरु हो गए। राजदरबार तक यह संदेश पहुंच गया कि शायद अब बादशाह को शिवाजी का कत्ल करनेका काम न करना पड़े, वह बीमारी से खुद ही मर जाएगा।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी नजदीक आ गई थी। उपयुक्त अवसर देखकर शिवाजी ने दानपुण्य शुरु कर दिया। मुक्तहस्त से दान दिया जाने लगा। हीरे-जवाहरात लुटाये जाने लगे। इस काम में मुगल सरदारों एवं पहरेदारों को प्राथमिकता दी गई। धनदान के साथ ही अन्नदान भी शुरु किया गया। पिटारे भर-भर कर मिठाईयाँ बाहर जाने लगी। पहरेदारों के घर मिठाई के पिटारों से पट गये।

जन्माष्टमी के दिन शिवाजी की तबीयत अचानक बहुत ही बिगड़ गई। उसके दो दिन बाद फौलाद खां उन्हें देखने खुद गया और इस नतीजे पर पहुंचा कि अब वे केवल एक-दो दिन के ही मेहमान हैं। औरंगजेब को जब यह सूचना मिली तो वह बहुत ही खुश हुआ।

द्वादशी आते-आते शिवाजी आखरी साँस लेने लगे। उस दिन उनकी कोठरी में पूरी तरह सन्नाटा था। फौलाद खाँ ने झाँक कर देखा कि मिठाई के पिटारे खुल पड़े है और शिवाजी धीरे-धीरे इस प्रकार सांस ले रहे हैं जैसे उन्हें साँस लेने मैं कठिनाई हो रही है।

मिठाई के पिटारे प्रतिदिन की भांति एक-एक करके बाहर निकलने लगे। अवसर देखकर शिवाजी एक पिटारे में और दूसरे में शम्भाजी बैठ गए और किले के बाहर चले गए। यह १७ अगस्त १६६६ का दिन था। हीरोजी फर्जन्द उनके स्थान पर लेट गया और मदारी मेहतर पूर्ववत् उसका पैर दबाता रहा। पहरेदार उसे देखकर निश्चिंत थे कि शिवाजी आज नहीं तो कल मर ही जाएगा।

जब रात कुछ घनी हो गयी तो हीरोजी फर्जन्द और मदारी मेहतर घबराए से कोठरी के बाहर आये- पहरेदार से गिड़गिड़ा कर बोले- ''भइया, अब तो शिवाजी महाराज की आखिरी सांस निकलने को है। अगर कहीं से गंगाजल मिल जाता तो उनके मुंह में दो बूंद डाल देते।''

''रात को गंगाजल कहाँ मिलेगा? मर जाने दो ऐसे ही।''पहरेदार कड़क कर बोला।

वे दोनों चिरौरी करने लगे- ''नहीं भैया, ऐसा मत कहो। इजाजत हो तो हम ही जाकर किसी हिन्दू के घर से मांग लायें।''

''जाओ, खोपड़ी मत चाटो- जल्दी मरे बला टले।'' कहकर पहरेदार आगे निकल गया। वे दोनों भी इस प्रकार कैद से मुक्त हो गए। पहरेदार अपना पहरा बदलते रहे और खाली कोठरी की निगरानी बड़ी ही मुश्तैदी से करते रहे।

शिवाजी पिटारे में बैठकर किले से बाहर आये तो पूर्व योजनानुसार ६ मराठा जवान घोड़ा लिए उनकी प्रतीक्षा में खड़े थे। पिटारे पहुंचे, शिवाजी और शम्भाजी बाहर निकले। घोड़े पर बैठे और स्वराज्य की ओर चल पड़े। शिवाजी मुगल सरदार के वेश में थे। घोड़े आगरा से मथुरा पहुंचे । शम्भाजी को कृष्ण जी त्रिमल को सौंपकर वे मुगलवेश का त्याग कर बैरागी बनकर काशी की ओर चल पड़े।

इधर सबेरा हुआ। पहरा बदला लेकिन कमरे में प्रतिदिन की भांति कोई हलचल नहीं हुई तो फौलाद खां को शंका हुई। वह कमरे में घुसा तो सन्न रह गया। शिवाजी नदारद थे, उनकी जगह दो-तीन तकियों को चादर औढ़ा दी गई थी। वह घबरा कर चीख उठा-''भाग गया, भाग गया। शिवाजी उड़ गया।'' रामसिंह से भी पूछताछ की गई किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। दो दिन तक घोड़े दौड़ा कर मुगल सिपाही वापस लौट आए किन्तु शिवाजी का कहीं कुछ पता नहीं चला। जो दो लोग हाथ लगे वे थे मराठा सरदार रघुनाथ पंत कारडे और सोनदेव डबीर। फौलाद खाँ खुश था कि शायद अब इन दोनों से कोई सुराग मिल जाए। किन्तु सब व्यर्थ ही रहा। उनकी कोड़ों से पिटाई की जाती रहीं, वे प्रसन्न होते रहे। वे तो इसी योजना से रुके ही थे कि मुगल सिपाही उन्हें पकड़ लेने के बाद शिवाजी का पीछा करना छोड़ देंगे। हुआ भी यही। इधर शिवाजी स्वराज्य की ओर बढ़ते जा रहे थे, उधर औरंगजेब की परेशानी भी बढती जा रही थी। उसने रामसिंह की मनसबदारी छी ली। दरबार में आने पर प्रतिबंध लगा दिया। नेताजी पालकर को कैद करके आगरा भेजने का फरमान जारी किया गया। पर अब सब व्यर्थ था। शिवाजी माँ भवानी के चरणों में सुरक्षित पहुंच गए।

सचित्र प्रस्तुति- **संकेत गोस्वामी**

चंद्रमा

चंद्रमा एक चट्टानी गेंद है. यह हमारी पृथ्वी का प्राकृतिक उपग्रह है और आकार में उससे चौथाई है. हालांकि वजन की बात करें तो 81 चंद्रमा पृथ्वी के बराबर होंगे.

चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी की तुलना में 1/6 है यानी पृथ्वी पर जिस चीज का वजन 120 किलोग्राम है वह चंद्रमा पर 20 कि.ग्रा. का ही होगा.

सन् 1609 में वैज्ञानिक गैलीलियो ने खोज निकाला था कि चंद्रमा पर पहाड़, गड्ढे और मैदान सभी कुछ मौजूद हैं.

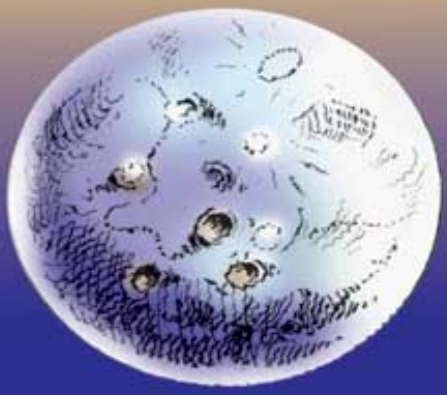

रात के आकाश में चमकती एकमात्र वही जगह है, जहां मनुष्य के कदम पड़े हैं. नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन यू.एस.अपोलो-11 अभियान के द्वारा 21 जुलाई 1969 को चंद्रमा पर पहुंचे थे.

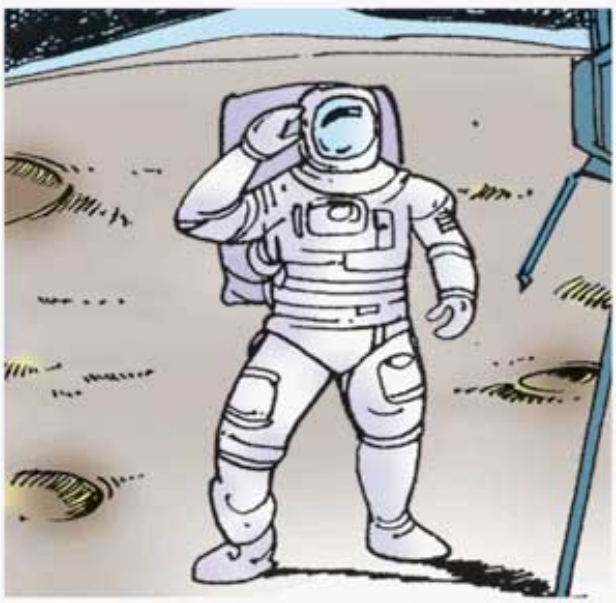

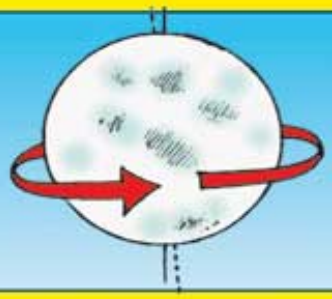

चंद्रमा अपने अक्ष पर पृथ्वी के 27 दिन और 8 घंटे की अवधि में एक परिक्रमा पूरी कर लेता है. यह अपने अक्ष पर 6.7 डिग्री झुका हुआ है.

जब चंद्रमा घूमता हुआ सूर्य और पृथ्वी के बीच आ जाता है तो पृथ्वी के कुछ हिस्से में ऐसा दिखता है जैसे उसने सूर्य को ढक लिया है. यह अवस्था सूर्य-ग्रहण कही जाती है.

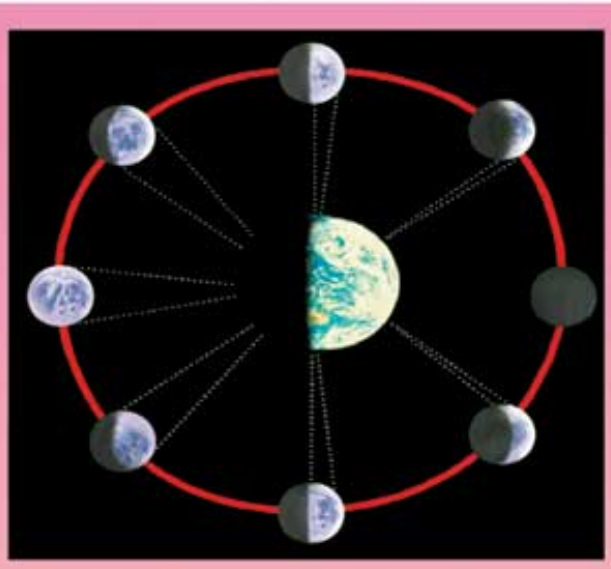

एक माह की अवधि में हम चंद्रमा के चमकते हिस्से को घटता-बढ़ता देखते हैं, इसे चंद्रमा की कलाएं कहते हैं. चंद्रमा, पृथ्वी की परिक्रमा पूरी करने के लिए रोज करीब 60,000 किलोमीटर की यात्रा करता है.

पृथ्वी के सबसे नजदीक चंद्रमा है जरूर पर फिर भी इनकी दूरी 3,84,000 किमी है. अगर एक रेल 100 मील (161 कि.मी.) प्रति घंटा की रफ्तार से चले तो भी चन्द्रमा तक 99.5 दिनों में पहुंचेगी.

लूना-3 उपग्रह ने 1959 में पहली बार चंद्रमा के उस हिस्से की तस्वीरें भेजी थी जो पृथ्वी से दिखाई नहीं देता. चंद्रमा की सतह पर मौजूद सफेद मिट्टी से सूर्य का प्रकाश परावर्तित होता है. यही चमक चांदनी के रूप में पृथ्वी पर पहुंचती है.

क्या आप विश्वास करेंगे ?

चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण आपका वजन जरा सा कम हो जाता है, जब वह ठीक आपके सिर के ऊपर चमक रहा होता है.

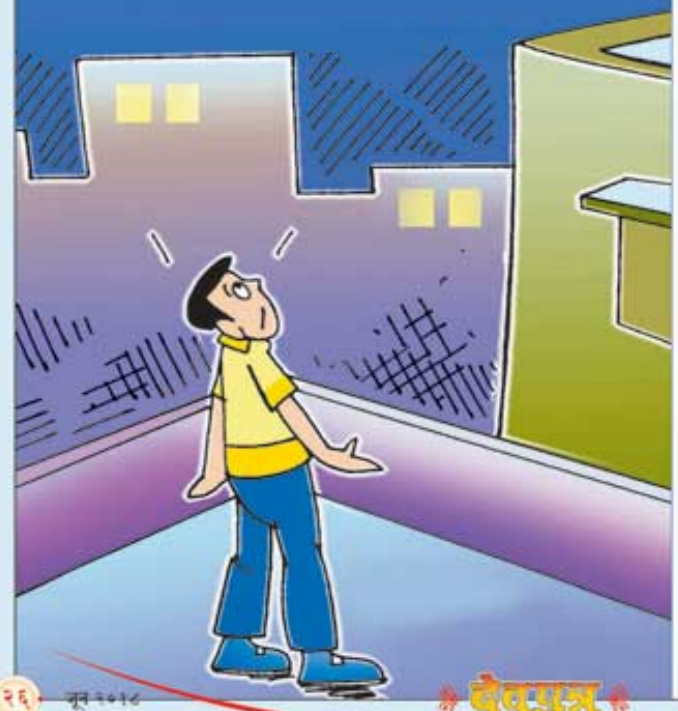

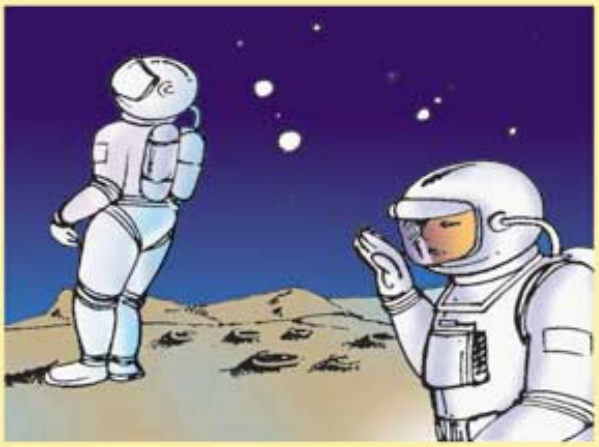

आखिर में यह विशेष बात भी जान लीजिए अगर आप कभी चंद्रमा पर पहुंच भी गए तो वहां आप अपने साथ गए, साथी की बात नहीं सुन सकेंगे और तो और आपको आकाश भी पृथ्वी की तरह नीला नहीं काला दिखाई देगा जानते हैं ये बातें क्यों होंगी ? क्योंकि चंद्रमा पर कोई वायुमंडल नहीं है.

समाप्त

भारतीय रेलवे के २७ रोचक तथ्य

जानकारी : प्रो. बी.आर. नलवाया

- भारत में रेलों की स्थापना ब्रिटिश कंपनियों द्वारा की गई थीं।
- भारत में प्रथम रेल १६ अप्रैल १८५३ को ३४ मील मार्ग पर बम्बई से थाना तक चली थी।
- भारत में ७,१७२ रेल्वे स्टेशनों से ट्रेनों का संचालन हो रहा है।
- विश्व में दूसरा सबसे बड़ा रेल्वे नेटवर्क भारत में ही है।
- १.१५ लाख किलोमीटर लम्बा नेटवर्क प्रतिदिन भारतीय रेलवे में हो रहा है।
- भारत में १२,६१७ यात्री ट्रेने प्रतिदिन दौड़ती है।
- भारत में ७,४२१ मालगाड़ियाँ भी रोजाना दौड़ती है।
- भारतीय रेल २.३० करोड़ यात्री को प्रतिदिन इधर से उधर ढोती है।
- भारतीय मालगाड़ियों द्वारा ३० लाख टन माल की प्रतिदिन ढुलाई की जाती है।
- भारत में इस समय रेलवे के १६ झोन है।
- भारतीय रेल का राष्ट्रीयकरण १९५० में हुआ।
- भारत में द्वितीय रेल १८५४ में हावड़ा से दुगली के मध्य चलाई गई।
- कन्याकुमारी से जम्मूतवी के मध्य सप्ताह में एक बार चलने वाली हिमसागर एक्सप्रेस भारत की सर्वाधिक दूरी तय करने वाली रेलगाड़ी है।
- मीटर गेज पर चलने वाली भारत की प्रथम सुपर फास्ट गाड़ी पिंक सिटी एक्सप्रेस है जो दिल्ली तथा जयपुर के बीच चलती है।
- भारत में पहला डीजल इंजन सन १९४७ में अमेरीका से आया था। इस इंजन को टाटानगर–राऊरकेला बर्नपुर रेल मार्ग पर चलाया गया था।
- चितरंजन लोकोमिटिव वर्क्स, कोलकाता की स्थापना १९५० में भाप इंजन बनाने के लिए की गयी थी।
- इण्टीग्रल कोच फैक्टरी, पैराम्बूर (तमिलनाडू) से पहला यात्री डिब्बा अक्टूम्बर, १९५५ में बनकर निकला।
- डीजल लोकोमोटिव वर्क्स, वाराणसी कारखाने में डीजल इंजन जनवरी, १९६४ में बनकर बाहर निकला।
- भारतीय रेलवे में सर्वप्रथम मेट्रो रेलवे कोलकाता में २४ अक्टोबर, १९८४ को संचालित हुई।
- भारतीय रेलवे में सर्वप्रथम रेल दुर्घटना २५ जनवरी १८६९ को भोरघाट (पूना–बम्बई मार्ग) में हुई थी।
- इंटरनेट पर रेल आरक्षण की सुविधा ३ अगस्त, २००२ से सर्वप्रथम दिल्ली से शुरु की गई।
- भारत की सबसे अधिक लम्बी रेलगाड़ी प्रयागराज एक्सप्रेस है, जिसमें २६ कोच लगे होते हैं।
- काश्मीर घाटी में पहली रेलगाड़ी का प्रचलन ११ अक्टूबर २००८ से प्रारंभ हुआ।
- भारतीय रेलवे के भर्ती बोर्ड देश के १९ नगरों में स्थित है।
- भारतीय रेलवे के आयुक्त, सुरक्षा मुख्यालय देश के ५ नगरों में स्थित है।
- देश में सर्वाधिक व्यस्त नई दिल्ली रेलवे स्टेशन जहाँ प्रतिदिन लगभग २७० रेलगाड़ियाँ व औसतन ६ लाख लोग आते जाते है।
- फिलहाल रेलवे के पास १३ लाख कर्मचारी है इसके अतिरिक्त २ लाख कर्मचारियों की और जरूरत है जबकि सन १९९०–९१ में १६.१२ लाख नियमित कर्मचारी व लगभग २ लाख आकस्मिक कर्मचारी कार्यरत है।

● मंदसौर (म.प्र.)

|| नशा निरोधक दिवस : २६ जून ||

हुक्का सेन्टर

कहानी : पवित्रा अग्रवाल

रजत रात के दो बजे तक घर नही आया था। मोबाइल भी बन्द किया हुआ है माता पिता दोनों परेशान थे। रात को चार बजे फोन की घंटी बज उठी।

उधर से आवाज आई– ''क्या आप रजत के पिता बोल रहे हैं?''

''हम पुलिस स्टेशन से बोल रहे हैं.. आपका बेटा अपने कुछ दोस्तों के साथ पुलिस की हिरासत में है।''

''क्या किया है उसने?''

''सब फोन पर ही जान लेंगे या यहाँ आने का कष्ट भी करेंगे...रात को चार बजे तक वो घर से बाहर है तो कुछ अच्छा करने की उम्मीद तो आप को नहीं होनी चाहिए।''

''ठीक है श्रीमान जी मैं अभी पहुँच रहा हूँ।''

रजत की माँ ने पूछा– ''कहाँ जाना है... किस का फोन था?''

''पुलिस का...''

''पुलिस का?... रजत ठीक ता है न... कोई दुर्घटना तो नहीं कर बैठा?''

''मुझे क्या मालूम कि क्या हुआ होगा। अब वहाँ जाकर ही पता चलेगा।''

''मैं भी साथ चलूँ?''

''नहीं तुम रहने दो।''

''पर तुम अकेले तो मत जाओ।''

''कि से साथ ले जाऊँ..किसी पड़ोसी को?... पता नहीं क्या करके बैठा है... मुझे अकेले ही जाना पड़ेगा।

इस लड़के ने तो जीना मुश्किल कर दिया है।''

''जब हाथ में पैसे ज्यादा होंगे तो नई खुराफातें सूझेंगी... पर तुम भी मेरी कहाँ सुनते हो। अपने अभावग्रस्त बचपन से बेटे को नहीं गुजरने देना चाहते।''

''अब चुप हो जाओ यह समय बातें करने का नहीं है।''

''मैं तो चुप ही हूँ... थोड़े रुपए डाल कर ले जाओ।''

''रख लिए हैं।''

पुलिस स्टेशन पहुँच कर रजत के पिता पुलिस इंस्पेक्टर से मिले– ''क्या हुआ श्रीमान्! रजत ने क्या किया है?''

''एक हुक्का सेन्टर पर छापा मार कर वहाँ से कुछ लड़कों को पड़क कर लाए हैं, उनमें आपका बेटा रजत भी अपने कुछ दोस्तों के साथ है। .... हुक्का सेंटर क्या,

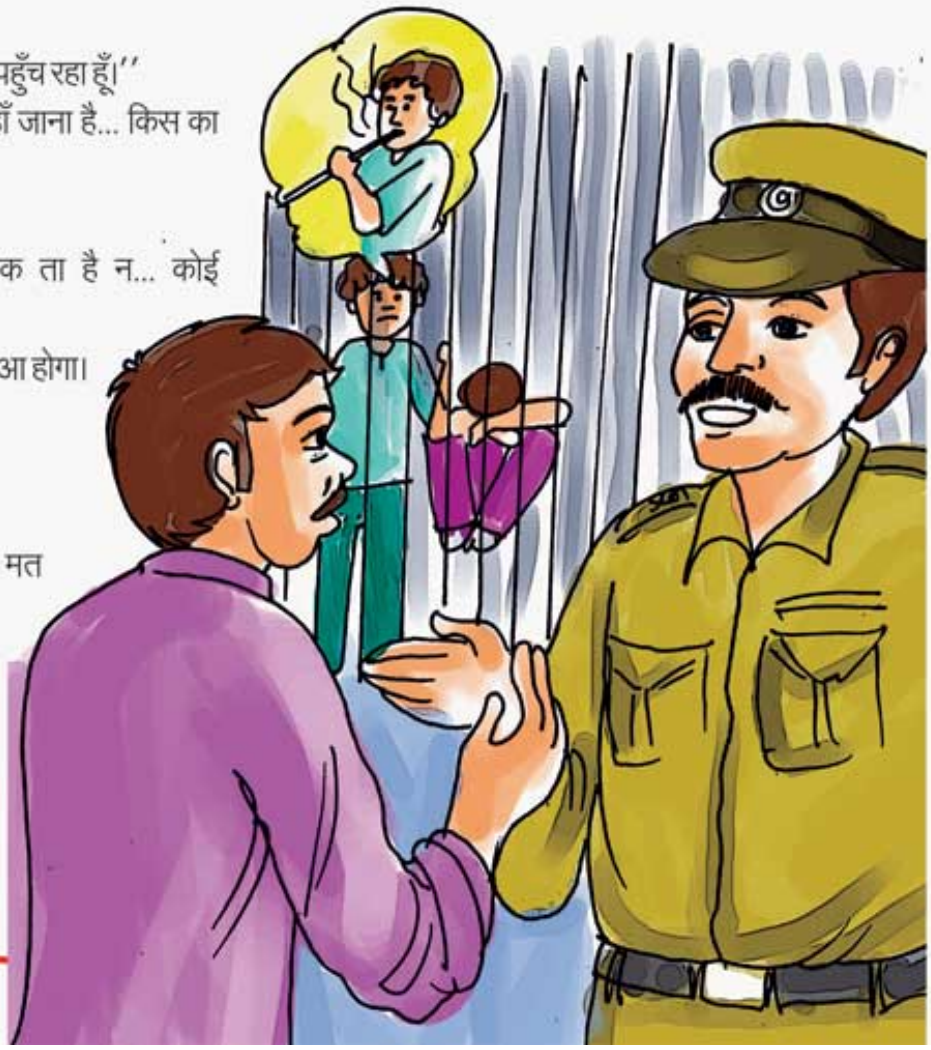

यह तो ड्रग्स के अड्डे हैं। नव जवान पीढ़ी को हम कैसे संवार सकते हैं आप लोगों को भी अपने बच्चों के क्रियाकलापों पर नजर रखनी चाहिए पर आप लोगों पर अपने बच्चों के लिए समय ही कहाँ है... बच्चों को अच्छी पाकेट मनी देकर आप अपनी जिम्मेदारियों से छुटकारा पा लेते हैं। ... वह कहाँ जाता है, क्या करता है, उसकी मित्र मंडली कैसी है इस सब से आप लोगों को जैसे कोई सरोकार ही नहीं है।''

''आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं, कहाँ है वो... क्या मैं उससे मिल सकता हूँ?''

''लॉकअप में है। क्या उम्र है आपके बच्चे की?''

''सोलह साल का है।''

''इन्हें अभी से नहीं रोका गया तो आगे ये क्या करेंगे आप आसानी से अन्दाजा लगा सकते हैं।''

''श्रीमान! उसे सुधारने में आप मेरी कुछ मदद कर सकते हैं?''

''क्या मदद चाहते हैं आप हम से?''

''एक बार थाने में उसकी पिटाई कर दीजिए... मैं औरों की तो नहीं जानता पर वह जरूर डर कर गलत लोगों का साथ छोड़ देगा... पर उसे यह नहीं बताइएगा कि मैं ने आपसे ऐसा करने को कहा है।''

''आप पहले पिता हैं जो हम से इस तरह की बात कर रहे हैं वरना यहाँ तो आकर सब हम सब पर रोब मारने की कोशिश करते हैं, नेताओं के रिश्तेदार होने का डर दिखाते हैं। लगता है गलती उनके साहबजादों ने नहीं, उन्हें पकड़कर हमने की हैं।''

''हमने केस नहीं बनाया है वरना बच्चों का जीवन बर्बाद हो जाएग। हम उन्हें एक मौका सुधरने के लिए देना चाहते हैं और आपको भी कि बच्चों को भटकने से बचाएं। इन्हें अभी नहीं रोका गया तो फिर भविष्य में इन्हें अपराधी बनने से कोई नहीं रोक सकता। .... थोड़ी देर में आप उसे ले जा सकते हैं।''

''धन्यवाद महोदय, आप बहुत अच्छे हैं।''

● हैदराबाद (तेलंगाना)

बाल प्रस्तुति

व्यायाम करो

कविता : नवीन कुमार जैन

मन में उमंग रहे
तन में तरंग रहे
जीवन में रंग हों
खुशियाँ संग रहें
स्वस्थ रहे तनमन
मस्त रहे जीवन
स्फूर्ति रहे तन में
शांति रहे जीवन में
तो सब एक काम करो
प्रतिदिन व्यायाम करो।

● बड़ा मलहरा (म.प्र.)

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (११)

कथासत्र–१०

संवाद : डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'

फिर आया रविवार। शंकर, मनोरमा और माधव पहुँचे आम के वृक्ष के नीचे। दादाजी भी आकर बैठ गए और कहना शुरु किया– हरिदेव, सुभद्रा और गोविन्द अश्वक्लांत जनार्दन से आकर हाजो नामक स्थान के हयग्रीप माधव मंदिर के पास भेल रुकवाया। तीनों नदी के तट पर बैठ कर सोचने लगे। इतने में हयग्रीव माधव मंदिर में तीन ब्राह्मण पुजारी स्नान के लिए वहाँ पहुँचे। तीनों को देखकर परिचय पूछा। गोविन्द ने सबकुछ वर्णन किया। हरिदेव का मुख मण्डल देखकर तीनों ब्राह्मण आकर्षित हुए। स्नान तर्पण कर अतिथियों को साथ लेकर मंदिर आए। हरिदेव मंदिर में प्रवेश कर प्रभु की प्रार्थना करने लगे। उनकी तन्मयता देखकर पुजारी दंग रह गए। इतने में उन्होंने देखा कि मूर्ति के गले पर सुबह पहनाई गई माला हरिदेव के गले पर आकर गिरी। उस समय हरिदेव के नयनों से प्रेमाश्रु प्रवाहित हो रहा था।

वहाँ भी उनका भव्य स्वागत हुआ। अनेक लोग उनके शिष्य बने। सब लोग हरिदेव को वहाँ रहने का आग्रह किया। उनमें भी खागरा नामक एक व्यक्ति उनका ऐसा अनुगामी बना कि उसने अपनी जमीन–जायदाद उनको समर्पित करने के लिए तैयार हो गया, परन्तु हरिदेव ने कहा कि पहले तीर्थ यात्रा करना है, बाद में जो होगा प्रभु की इच्छा से ही होगा।

खागरा और अनेक लोगों के साथ पुनः ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे पहुँचे। भेल पहले से तैयार था। सब लोग उनको बिदा लेकर चलने लगे, परन्तु खागरा छोड़कर जाना नहीं चाहता। वह रोने लगा। हरिदेव ने उसको समझा बुझा कर विदा किया। इतने में एक अपरिचित व्यक्ति वहां उपस्थित हुए। उन्होंने हरिदेव को कहा– केले के भेल से इतने दूर तक जाना असंभव है, तुम वापस जाओ, परन्तु हरिदेव को दृढ़ता के साथ कहा कि नहीं मेरा संकल्प है, जो होगा हम जाएंगे ही। हरिदेव का दृढ निश्चय देखकर वे पटवार बनकर भेल चलाने लगे और पांच दिन पश्चात् जगन्नाथपुरी पहुँच गए। वहाँ विश्वम्भर महापात्र के घर में रहे। दूसरे दिन समुद्र में स्नान–तर्पण कर मंदिर में प्रवेश किया। तीनों मूर्तियों के पास उपस्थित होते ही सुभद्रा भगवान श्रीकृष्ण के मूर्ति में समा गई।

मनोरमा – दादाजी! आज के संदर्भ में यह एक अद्भुत घटना है न? हमने पुस्तक में पढ़े है कि मीरा भी इस प्रकार भगवान की मूर्ति में समा गई थी और सुभद्रा भी।

दादाजी – भगवान के अनन्य भक्त के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। मैंने पहले ही कहा था न, सुभद्रा के जन्म के पश्चात जब ज्योतिषियों ने नामकरण कर जन्म कुण्डली बनाई थी तब कहा था कि सुभद्रा आठ वर्ष की उम्र में किसी तीर्थ में अन्तर्धान हो जाएगी। उस समय सुभद्रा की आयु आठ वर्ष हुई थी। हरिदेव और गोविन्द विभोर होकर आँसू बहा रहे थे, इतने में भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति के उत्तरीय वस्त्र आकर हरिदेव के गले में सुशोभित हो गया। यह दृश्य देखकर वहाँ उपस्थित सभी भक्त आश्चर्य चकित हुए। जगन्नाथपुरी में भी हरिदेव का बहुत आदर सम्मान हुआ। वहाँ कुछ दिन रहकर एक ब्राह्मण भक्त के साथ वैद्यनाथ धाम चले और दिनमणि नामक पण्डा के घर रहे। वहाँ भी कुछ अलौकिक घटना प्रदर्शन की।

वैद्यनाथ में चार दिन रहकर गया धाम गए। दिनमणि पण्डा भी उनके साथ चले। वहाँ भोलानाथ पण्डा के घर मेहमान बने। दिनमणि ने हरिदेव की अलौकिक शक्ति की कथा वहाँ के लोगों को सुनाई। उसके बाद भोलानाथ के साथ काशीधाम पहुँचे। काशी में हरलाल पण्डा के घर रहे। वहाँ भी तीर्थकर्म सम्पन्न कर प्रयाग तीर्थ में उपस्थित हुए। वहाँ कृष्णाचार्य नामक एक विद्वान ब्राह्मण के अतिथि बने। त्रिवेणी सहित सभी तीर्थ देखकर कृष्णाचार्य के साथ वृन्दावन गए और ब्रजनाथ ब्राह्मण के घर में ठहरे। वहाँ मथुरा गोकुल सहित सभी तीर्थ दर्शन किए। उसके बाद हरिद्वार, ऋषिकेश, देवप्रयाग होकर बदरीनाथ गए। इस

प्रकार शैल तीर्थादि दर्शन कर पुनः काशीधाम आए। वहाँ अपने पूर्वजों के विद्वान पुरुषोत्तम विद्यावागीश से मिले। वहाँ कामरूम के दो वैश्य हरिपाल और रामपाल भी सहयात्री बने। काशी में हरिदेव ने श्रद्धानंद नामक एक विद्वान से वेद, पुराण विशेष रूप से भागवत का ज्ञान प्राप्त किया। हरिदेव का जिज्ञासा देखकर श्रद्धानंद प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया। काशी विश्वनाथ मंदिर में भगवान शिव ने हरिदेव को श्रीकृष्ण कवच प्रदान किया। इस प्रकार काशी में हरिदेव एक परमविद्वान भक्त बने। वहाँ से पुनः जगन्नाथपुरी आए और पांच वर्ष वहां के भक्तों को भागवत सुनाई। उनके ज्ञान और भक्ति से मुग्ध होकर उनको भागवताचार्य उपाधि प्रदान किया। एक परिपक्व गुरु बन आप नवद्वीप कामरूप में उपस्थित हुए।

वापस आकर अनेक विरुद्धवादियों से संघर्ष करना पड़ा। उस समय कामरूप में तांत्रिक उपासना का बोलबाला था। देवी–देवताओं के सामने पशु पक्षियों के साथ सैकड़ों मनुष्य को भी बलि वेदियों पर चढ़ाया गया था। हरिदेव ने इसका विरोध कर एक श्रीकृष्ण भक्ति धर्म प्रचार करने लगे। इस पावन कार्य हेतु बहरी ग्राम में सर्वप्रथम सत्रानुष्ठान की स्थापना की और अनेक लोक उनके शिष्य बने। तांत्रिक हिंसा धर्म को नकार कर उन्होंने निर्मल अहिंसा पर आधारित एक विष्णुभक्ति धर्म समाज में प्रचारित करने लगे।

गुरु हरिदेव ने तिलोत्तमा नामक कन्या से विवाह भी किया और दो कन्याएँ और एक पुत्र का जन्म हुआ। बड़ी पुत्री भुवनेश्वरी कुमारी बनकर भक्तिधर्म प्रचार में समर्पित हो गई। छोटी बेटी का विवाह हुआ परंतु एक बार तैरकर नदी पार होते समय एकमात्र पुत्र दामोदर का जल समाधि हो गया। एकलौते पुत्र की मृत्यु को भगवान का आशीर्वाद मानकर एक बूंद आँसू भी नहीं बहाया। जीवन भर भागवत धर्म के प्रचार–प्रसार और साहित्य का सृजन करते रहे। पहले भी कहा गया कि पूर्वोत्तर भारत याने कामरूप के लोग पूर्णतः मांसाहारी है, लेकिन गुरु हरिदेव शाकाहार पर अधिक बल दिया था। उस समय कामरूप में नारी को धर्माधिकार नहीं दिया गया था, परंतु गुरु हरिदेव ने अपनी

बड़ी बेटी को सत्राधिकार बनाकर एक उदार नीति स्थापित कर गए।

जीवन में श्री हरिदेव गुरु तीन बार रोए थे, एक बार पिता माता की मृत्यु के समय, दूसरे बार उनके परम आत्मीय जीवन रक्षक गोविन्द की मृत्यु के समय और तीसरी बार श्रीमंत शंकरदेव के तिरोभाव के समय। इस प्रकार प्रायः एक सौ चालीस वर्ष भक्तिधर्म प्रचार–प्रसार और साहित्य का सृजन कर सन १५६६ ई. में आपका तिरोभाव हो गया। महापुरुष हरिदेव ने अनेक ग्रंथ गीत आदि की रचना की थी, उनमें भक्ति–रस–तरंगिनी, शरणसिद्धांत, हरिनामशरण पद्धति, रामाभिषेक तथा गद्य या कथा में भी भक्ति परक लेख लिखे थे, जो श्रीमद्भागवत् पर आधारित है।

माधव – नानाजी आपने जो कहा श्रीमंत शंकरदेव कौन थे?

दादाजी – श्रीमंत शंकरदेव कामरूप के प्रमुख संत साहित्यकार और एकेश्वरवादी धर्म के प्रचारक थे। आगे उनके बारे में बताऊँगा। आज समय अधिक हुआ। राम...राम...

तीनों – राम...राम...

शौचालय

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

इन दिनों देशभर में जारी स्वच्छता अभियान को जबरदस्त प्रतिसाद मिल रहा था। हमारे छोटे शहरों में भी इसका सुखद व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। कुछ लोग जो वर्षों से खुले में शौच जाने के आदी थे वे भी उस आदत से किनारा कर चुके थे। सबसे बड़ी बात आदत में शुमार होती जा रही स्वच्छता की भावना जन जन के दिलोदिमाग में प्रवेश करती जा रही थी। अब कचरा सड़क पर फेंकने से पहले दिमाग में यह बात कौंध जाती थी कि यह अच्छी बात नहीं, यह दण्डनीय, निदंनीय है और शिष्टाचार के विपरीत भी। जब हम अपने घर को स्वच्छ रख सकते हैं तो जिन सड़कों पर हम दिन रात चलते–दौड़ते हैं उन्हें क्यों नहीं?

लोटापार्टी भी लगभग बंद हो चुकी थी। यदाकदा कोई इस तरीके को अपनाना भी चाहता तो शहर के उत्साही युवाओं की टोली सींटियाँ बजाकर उन्हें शर्मसार कर, खाली हाथ लौटने को मजबूर कर देती।

कमलकिशोर की तीन बेटियाँ थी– अल्पना, दीक्षा और प्रतीक्षा। बेटा कोई था नहीं वे नियति के आदेश को स्वीकारते, बेटियों का भी पालन पोषण खूब मन से कर रहे थे।

स्वच्छता अभियान का यह आलम था कि शौचालयविहीन घरों में धड़ल्ले से शौचालय बनावाए जाने लगे। एक दिन अल्पना ने अपने पिताजी से कहा– ''पिताजी, क्यों न हम लोग अपने घर में शौचालय बनवा लें?'' ''हाँ पिताजी, हमारी कक्षा के लगभग सभी बच्चों के घरों में शौचालय बन गए हैं। ''दीक्षा ने कहा। हमारे भी पिताजी... मुझे शर्म लगती है जब मैं बताती हूं कि हमारे यह शौचालय नहीं हैं–''प्रतीक्षा ने बुझे स्वर में कहा।

''हाँ, बच्चो! इरादा तो नेक और समयनुकूल है।'' कमलकिशोर ने सहमति जताते खुशी दर्शाई। तीनों बेटियाँ प्रसन्न हो गई। दीक्षा ने प्रशंसा की– ''हमारे पिताजी कितने अच्छे हैं। हमें भी अपने जमाने के साथ चलना चाहिए''– कमलकिशोर ने कहा।

''फिर कब बनवाएंगे पिताजी?'' प्रतीक्षा ने उत्सुकतापूर्वक पूछ लिया। ''जब तुम कहो। लेकिन पहले यह तय करो कि शौचालय देशी चाहिए या विदेशी?'' कमलकिशोर ने पलटकर पूछ लिया। ''हाँ यह बात तो है। मेरे ख्याल से देशी कमोड ठीक रहेगा'' – दीक्षा बोली। ''नही मेरे ख्याल से वेस्टर्न याने विदेशी कमोड बेहतर रहेगा'' – प्रतीक्षा ने अपना पक्ष रखा। अल्पना तटस्थ लगी, उसने सवाल कर दिए– ''एक बहन पक्ष ले रही है स्वदेशी का और दूसरी बहन पक्ष ले रही है विदेशी का... तुम दोनों अपने अपने पक्ष में तर्क प्रस्तुत करो।''

दीक्षा ने कहा– '' क्योंकि देशी प्रकार के कमोड के इस्तेमाल में व्यक्ति को उठक बैठक करना पड़ती है इससे थोड़ी वर्जिश हो जाती है तथा खून की गति भी सामान्य बनी रहती है।'' ''बात तो उचित है''–कमलकिशोर ने हामी भरी। ''अब तुम बताओ''– अल्पना ने प्रतीक्षा से पूछा। प्रतीक्षा ने बताया–''विदेशी शौचालय आरामदायक होता है, ऐसा लगता है जैसे कुर्सी पर बैठे हों, बीमार लोगों और विशेषकर जिनके पैरों, कमर में तकलीफ होती है उसके लिए यह आरामदायक होता। '' '' हाँ बात तो इसकी भी ठीक है''– कमलकिशोर ने सहमति दी।

''नहीं पिताजी देशी कमोड पर बैठने में आपने पूरे पाचनतंत्र पर दबाव बना रहता है। जिससे पेट साफ रहता है''– दीक्षा ने दूसरा तर्क दिया। ''अब तुम बताओ प्रतीक्षा?'' अल्पना ने आमंत्रण दिया।'' एक हड्डी रोग विशेषज्ञ ने कहा है कि वैज्ञानिक तौर पर ५० साल की उम्र के बाद भारतीय शौचालय का उपयोग गलत है। क्योंकि भारतीय शौचालय में उठते समय घुटनों पर दबाव आता है। हाँ अगर कोई रोज व्यायाम करता हो तो ९० साल तक भारतीय शौचालय का उपयोग कर सकता है।''–प्रतीक्षा ने बताया। '' यह तो बहुत अच्छी बात है इससे अधिकांश उम्र के लोग भी व्यायाम की ओर प्रवृत्त होंगे''– कमलकिशोर बोले।

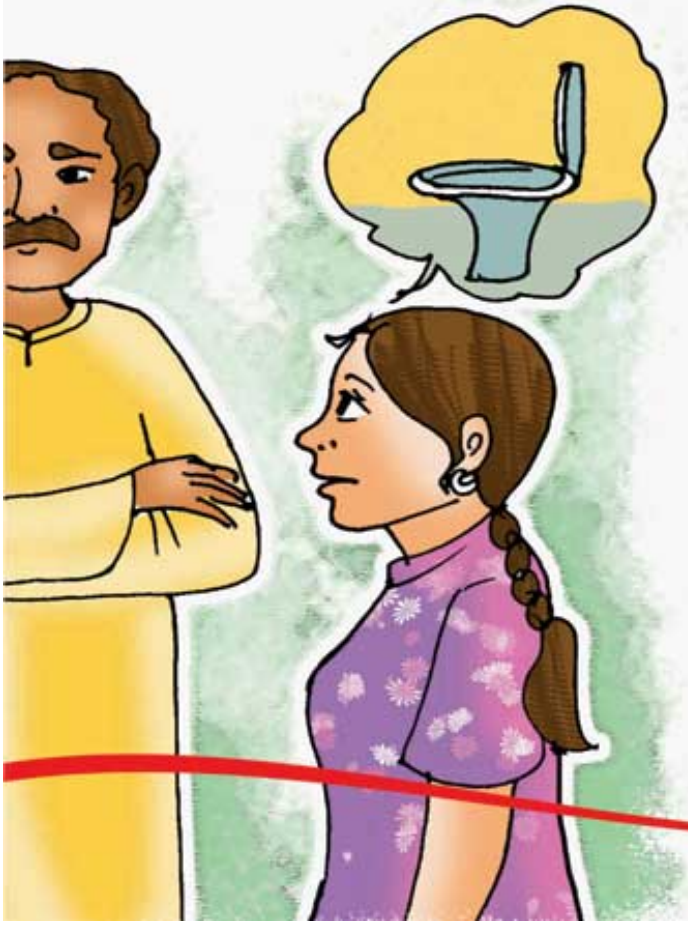

''एक बात और पिताजी समय के साथ चलते हुए हमें आधुनिक बनना चाहिए हर विदेशी तरीका बुरा नहीं होता''– प्रतीक्षा ने कहा। '' यह तो कोई ठोस तर्क नहीं हुआ''– कमलकिशोर ने इस बात असहमति व्यक्त की।

मैंने कहीं पढ़ा था...''एक बात यह कि देशी की तुलना में विदेशी शौचालय में अधिक पानी की जरूरत होती है।'' – दीक्षा ने आगे कहा। ''एक बात की ओर किसी का ध्यान नहीं गया। स्वास्थ्य के हिसाब से विदेशी शौचालय इसलिए भी ठीक नहीं क्योंकि उस सीट पर कई लोग बैठ चुके होते हैं। उनके शरीर का पसीना, बैक्टीरिया आदि सीट पर लग जाते हैं, मच्छर–मक्खियाँ भी वहाँ बैठ जाती हैं... इन सबसे बीमार लगने का खतरा बढ़ जाता है'' अल्पना ने बताया।

''हाँ, बिलकुल सही। अब एक बात मैं बताऊं... खुले में जो लोग जाते थे वे भी देशी प्रकार से बैठते थे आयुर्वेद और चरक संहिता में शौच का जो तरीका बताया गया है वह उपयुक्त है और उसके अनुसार देशी शौचालय ही ठीक है। इसलिए मेरे ख्याल से सेहत के लिए जरूरी है कि हम लोग देशी शौचालय इस्तेमाल करें... इससे हमारा स्वदेश प्रेम भी प्रकट होगा'' –कमलकिशोर ने कहा।

अल्पना ने सार निकाला– '' मैं तो कहूंगी कि घर में शौचालय होना अति आवश्यक है, वह अपनी सुविधानुसार देशी विदेशी कैसा भी हो सकता है।'' ''ठीक है तो फिर तय रहा कि हम लोग देशी प्रकार का शौचालय बनवाएंगे। मैं आज भी उसके लिए आदेश दे देता हूं। कमलकिशोर ने अपनी स्वीकृति की मोहर लगाते हुए कहा।

● इन्दौर (म.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

समय का सदुपयोग

कहानी : हरिसिंह चौधरी

बहुत समय पहले की बात है। अमित की माँ हर रविवार को कुछ अच्छे और मीठे पकवान बनाया करती थी। वह अपने बेटे को बहुत प्यार करती थी। एक दिन जब वह मीठी खीर बना रही थी, तो देखा कि गुड़ खत्म हो गया है। उसने सोचा कि क्यों न मैं अमित से गुड़ लाने की कहूँ। उन्होंने मन ही मन यह भी सोच लिया कि वह समय पर गुड़ ला पाएगा या नहीं। फिर वे सोचने लगी कि यदि वह नहीं भी ला पाएगा तो मैं स्वयं ले आऊंगी। कुछ सोचते हुए उन्होंने नन्हें अमित आवाज लगायी। इसके बाद उसके हाथ में दो रुपए रखते हुए कहा– ''बेटा! दौड़ कर जाओ और दुकान से गुड़ ले आओ।''

अमित घर से बाहर आया। राह में उसने देखा कि कुछ लोग एक जगह पर खड़े हैं और किसी चीज को ध्यानपूर्वक देख रहे हैं। वह कौतूहलवश पास गया तो देखा कि कुछ लोग कठपुतलियों का नाच दिखा रहे हैं। अमित का बाल मन भी नाच देखने के लिए थोड़ा मचल उठा। वह उस जगह आकर नाच देखने लगा।

उस मनमोहक खेल में वह इतना रम गया कि घर का कुछ ख्याल ही न रहा। तमाशा खत्म होने के बाद जब वह गुड़ लेकर घर पहुंचा, तो देखा किं खीर तैयार हो चुकी है। शायद माँ खुद दुकान से गुड़ ले आई थी। वह दुखी होकर एक कोने में बैठ गया।

उस समय उसके मन में यह विचार आया कि ईश्वर ने मुझे किसी आवश्यक कार्य को करने के लिए इस पृथ्वी पर भेजा है। माँ के साधारण कार्य को भी मैं जब पूरा नहीं कर पाया तो जीवन में श्रेष्ठ कार्यों को कैसे समय पर पूरा कर पाऊँगा? सच तो यह है, कि उस खास कार्य को पूरा करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। इसलिए हमें समय के सदुपयोग पर भी विचार करना चाहिए। क्योंकि किसी भी कार्य को चाहे वह छोटा ही क्यों न हो, यदि हम समय पर पूरा नहीं कर पाते हैं, तो बड़े कार्यों को सम्पन्न करने के बारे में कैसे सोच पाएंगे।

● बहरावण्ड खुर्द
(राज.)

ऐतिहासिक पहेलियां

सीताराम पाण्डेय

किसका भोजन केवल दुर्वा
बात-बात में आता क्रोध।
किसने शापा कण्व-सुता को
बच्चो, कहो नाम तुम शोध?

कौन साथ थे दोनों जन्मे
किनने पिता नहीं पहचाना?
किनका जन्म हुआ जंगल में
कौन पिता से दंगल ठाना?

किसने तोड़ा शंकर-धनुही
किसको पिता दिया वनवास?
त्रेता युग में युद्ध किया था
नाम बताओ तो शाबास।

जीवन में सिर्फ एक बार ही
मिथ्या बोल हुआ बदनाम।
द्वापर युग में युद्ध किया था
बच्चो, कह सकते हो नाम?

किसने बेधा मीन चक्षु को
किसे धनुर्धर जग जाना?
कौन रहा वर्षों कानन में
किसने महासमर ठाना?

जन्म लिया किसने धरती से
किसको पति दिया बनवास?
किसका हरण हुआ कानन से
पहचानो तुम करो प्रयास?

रवि समान तेजस्वी जन्मा
किंतु नदी में गया बहाया
जन्म लिखा रानी से लेकिन
सूत पुत्र था कहलाया?

(उत्तर इसी अंक में) ● रमणा (बिहार)

दोनों चित्रों में आठ अंतर बताओ

- देवांशु वत्स

(उत्तर इसी अंक में)

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

मिजोरम का राष्ट्रीय वृक्ष :

नागकेशर

डॉ. परशुराम शुक्ल

पर्वत वाला वृक्ष निराला,
बच्चो, इसको जानो।
बारहमासी पत्तों वाला,
आज इसे पहचानों।
भारत के उत्तर पूरब से,
बहुत पुराना नाता।
अंडमान, कोंकण, गोवा में
कहीं कहीं मिल जाता।
सीधा गोल तना अति सुन्दर,
मध्यम ऊँची काया।
उज्ज्वल धवल-धवल फूलों से,
अपना रूप सजाया।
खोदो इसका तना अगर तुम,
निकले गोंद सुहाना।
मेवा मिसरी डाल साथ में,
लड्डू इसके खाना।
बीज फूल फल पत्ते इसके,
काम सभी के आते।
सौ से अधिक जटिल रोगों की,
इससे दवा बनाते।

● भोपाल (म.प्र.)

योग रखे निरोग

श्रीपति यादव

- योग प्राचीन विद्या है, ऋषि मुनियों का अमूल्य धरोहर है। इसके प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं। प्रातः खाली पेट में करें।
- सांस लेने और संतुलन वाले आसनों पर मन केन्द्रित होने से मस्तिष्क शांत रहता है। लचीलापन में वृद्धि व दिमाग तेज होता है।
- योग से शरीर में बेहतर रक्त संचार होता है। आक्सीजन और पोषक तत्वों को मदद मिलती है।
- योग से पेट के अलावा शरीर के अन्य भागों से भी अतिरिक्त चर्बी को हटा सकती हैं।
- योग द्वारा कुंभक लगाने पर हृदय और उसकी धमनियों को स्वस्थ रखा जा सकता है।
- योग के द्वारा विभिन्न बीमारियों पर नियंत्रण रखा जा सकता है।
- योग करें, स्वस्थ रहें, दूसरों को भी करने के लिए प्रेरित करें।

● चन्द्रपुर (छ.ग.)

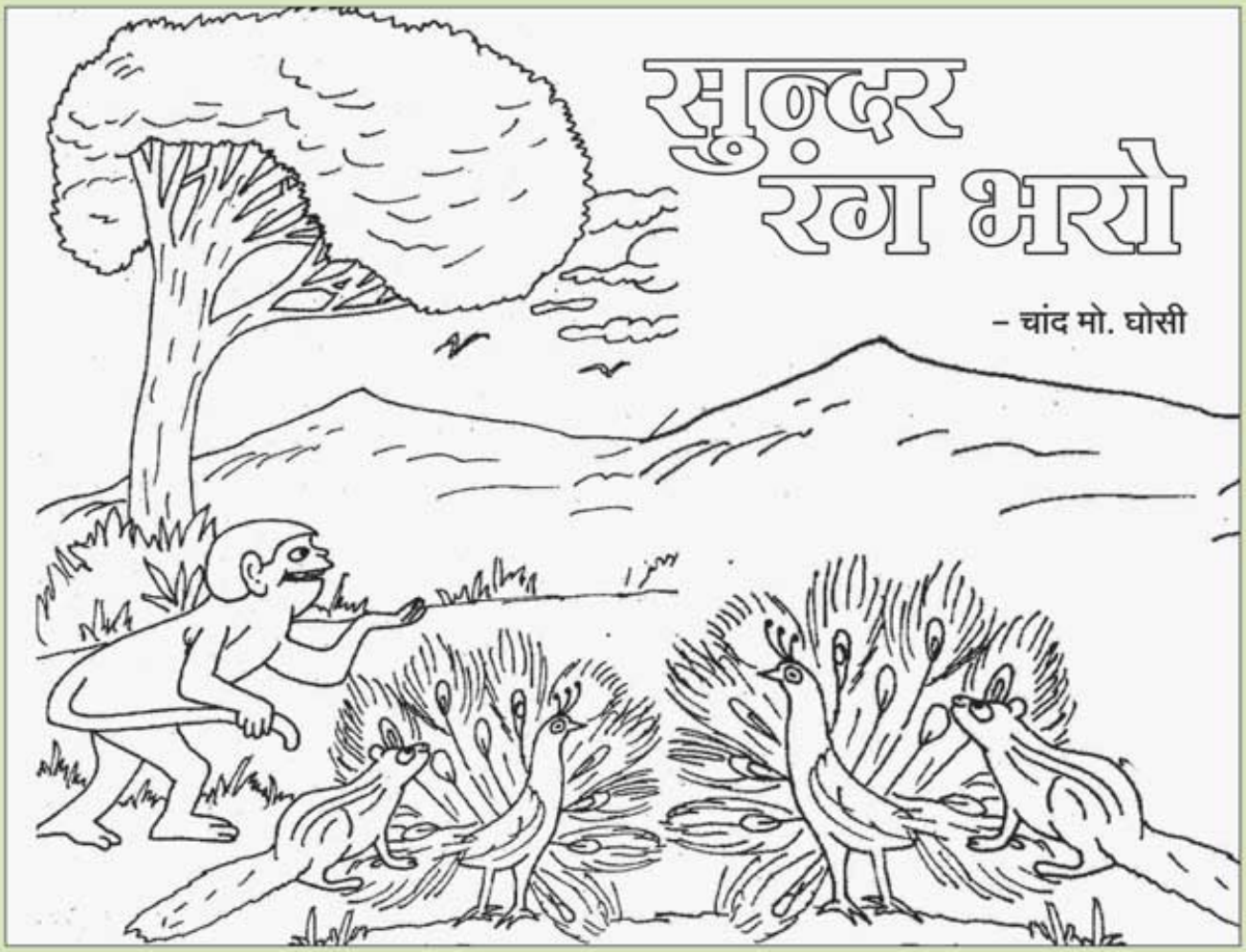

आठ अंतर बताओ

(१) चिड़िया की स्थिति में अंतर है (२) वृक्ष में कोटर नहीं है (३) शेर की पूंछ गायब है
(४) उसकी आंखों में भी अंतर है (५) पहले बच्चे की आंखें बंद हैं (६) दूसरे बच्चे की दूसरी टांग गायब है
(७) उसके हाथ में कम अंगुलियां हैं (८) दीवार की ईंट गायब है।

सही उत्तर

।। संस्कृति प्रश्नमाला ।।

मिथिला, भगदत्त, मैक्सिको, कांची, परशुराम, मालव, कुतुबमीनार, बिठूर (नाना साहब पेशवा के महल में), भरतपुर, कोनरेड एल्स्ट

छोटे से बड़ा

१०, ५, ८, २, ७, १, ९, ६, ३, ४

पहेलियाँ

दुर्वासा ऋषि, लवकुश, रामचन्द्र, युधिष्ठिर, अर्जुन, सीता, कर्ण

जल प्रपात

लघु आलेख : सतीश कुमार अल्लीपुरी

जलप्रपात आज दुनिया में पर्यटन का एक आकर्षक केन्द्र बन चुका है। इसकी सुन्दरता अन्य किसी पर्वतीय या धार्मिक स्थल से कम नहीं है। इसकी खूबसूरती निहारने का आनंद ही कुछ और है। विश्व के प्रसिद्ध जलप्रपात (वॉटर फॉल्स) को देखने के लिए पर्यटक वर्षभर आते ही रहते हैं। क्या आप जानते हैं कि जलप्रपात क्या होता है? यह कैसे उत्पन्न होता है? प्रत्यक्ष रूप से नहीं तो किसी फिल्म या धारावाहिक में आपने जलप्रपात का दृश्य अवश्य देखा होगा। यह किसी सामान्य झरने का विशालकाय रूप होता है।

आमतौर पर नदी क्षैतिज स्थिति में बहती है, लेकिन कभी-कभी नदी के मार्ग में कोई गहरी खाई आ जाती है जिससे नदी का बहाव क्षैतिज से ऊर्ध्वाधर हो जाता है अर्थात नदी ऊपर से नीचे की ओर बहने लगती है। नदी के बहते हुए पानी का वेग सामान्य ही होता है लेकिन नीचे गिरने पर इसमें गुरुत्वाकर्षण बल लगने लगता है और सामान्य वेग के साथ जुड़कर यह जल की गति को बहुत ज्यादा तेज कर देता है। गिरते हुए जल का दृश्य झरने के समान प्रतीत होता है, लेकिन यह झरना नहीं होता है। इसकी गति तूफानी होती है। इसी विशालकाय झरने के दृश्य को जलप्रपात कहते हैं। वास्तव में जलप्रपात एक ऐसी भूवैज्ञानिक घटना है जो किसी नदी के सामान्य प्रवाह में परिवर्तन के कारण उत्पन्न होती है।

सामान्यतया जलप्रपात नदी में ही उत्पन्न होते हैं, लेकिन यह समुद्र में भी मौजूद हो सकते हैं। किन्तु समुद्र में यह झरने के दृश्य जैसा नहीं बल्कि एक बड़ी भंवर के रूप में होते हैं। यह इतने विशाल व तीव्र होते हैं कि इनमें फसने के बाद बड़े-बड़े जहाजों का भी बचना मुश्किल हो जाता है। अधिकांशतः जलप्रपात प्राकृतिक ही होते हैं लेकिन मानव निर्मित जलप्रापात भी होते हैं। विश्व का सबसे बड़ा मानव निर्मित जलप्रपात ''कास्टकटा डी ले मामोर''(इटली) है। भारत में भी अनेक छोटे-बड़े जलप्रपात हैं। भारत के प्रसिद्ध जलप्रपात अधिकांशतया दक्षिण में हैं।

जिरूसप्ता (कर्नाटक), किलियुर (तमिलनाडू), गोडाचिनमल्की (कर्नाटक), दूधसागर (कर्नाटक-गोवा सीमा), कुतरालम (तमिलनाडू), अधानयारा (केरल), गोकाक (कर्नाटक), शिवानसमुद्र (कर्नाटक), वझांचल (केरल), चुंचनाकटटे (कर्नाटक), होगनकाल (कर्नाटक), दुदुमा (उड़ीसा), चचाई (मध्यप्रदेश), जोन्हा (झारखण्ड) जलप्रपात बहुत प्रसिद्ध हैं।

जलप्रपातों से जुड़े कुछ रोचक व महत्वपूर्ण तथ्य

- जोग (कर्नाटक) जलप्रपात भारत का सबसे ऊँचा और एशिया में दूसरा सबसे ऊँचा जलप्रपात है।
- कुतरालम (तमिलनाडू) का जलप्रपात नौ जलप्रपातों का एक समूह है। यह मदुरै से १६० कि.मी. दूर स्थित है।
- अफ्रीका में जाँबेजी नदी पर स्थित ''विक्टोरिया'' जलप्रपात दुनिया का सबसे बड़ा जलप्रपात है। इसकी लम्बाई १.६ कि.मी. है।
- विश्व का सबसे ऊँचा जलप्रपात ''एंजिला फॉल्स'' (वेनेजुएला) है। इसकी ऊँचाई ९७९ मीटर है। इसका नाम अमेरिका पायलट ''जिमी एंजिल'' के नाम पर रखा गया है।
- अमेरिका-कनाडा की सीमा पर स्थित ''नियाग्रा फॉल्स'' वास्तव में नियाग्रा नदी पर एरी झील के संयुक्त रूप है। यह विश्व का सर्वाधिक प्रसिद्ध जलप्रपात भी माना जाता है।

● चन्दौसी (उ.प्र.)

आपकी पाती

● **राजा भूगाँवकर, नागपुर (महा.)** – देवपुत्र मासिक का फरवरी २०१८ का अंक प्राप्त हुआ। यह अंक बच्चों के लिए बहुत उपयुक्त होगा ऐसा विश्वास है। २८ फरवरी अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान के रूप में मनाते है। भारत वर्ष के पूर्वकालीन वैज्ञनिकों का स्मरण युवा पीढी में होना यह बड़ी उपलब्धि है। सामान्य छात्रों को उनके नाम और कार्य भी ज्ञात नहीं ऐसा प्रतीत होता है। मेरा हिन्दी का ज्ञान भी देवपुत्र के पढ़ने से व्यवस्थित हो रहा है। मैं मराठी मातृभाषा होने के कारण लिखना संस्कृत प्रभाव से कर सकता हूँ, किन्तु हिन्दी बोलना तथा लिखना सही शब्दों के साथ नहीं हो सकता था। आपका अंक ही मुझमें यह कमियाँ दूर कर रहा है।

****

● **रूपसिंह, महरौनी (उ.प्र.)** – मार्च २०१७ का देवपुत्र विशेषांक निवेदिता इतना बोधमय, रोचक, प्रेरक लगा कि सम्पूर्ण पत्रिका दैनंदिनी पर शब्दशः अंकित कर ली। वास्तव में निवेदिता का व्यक्तित्व इतना अलौकिक, अदम्य राष्ट्रीयता से सराबोर, भारत अनुरक्ति, असीम त्याग, कण कण क्षण क्षण भारतमय, भारतीय जन, विशेषकर नारी शिक्षा पर समर्पित है। वास्तव में वे विवेक मानस पुत्री एवं आलौकिक प्रतिभा, कर्मयोग की सजीव मूर्ति, मानवता की उद्धारिका, मनीषी, मनस्वी, शिक्षा शिल्प विज्ञान की गहरी समझ रखने वाली भारत का परम कल्याणकांक्षी और असाधारण प्रतिभा की धनी आध्यात्मिक विभूति है।

अब थोड़ा हँस ले

पति कुछ दिनों से पत्नी को अंग्रेजी पढा रहा था।
एक दोपहर पत्नी ने कहा – चलो, डिनर कर लेते हैं।
पति ने सुधारा– दिन के भोजन को लंच और रात के खाने को डिनर कहते हैं।
पत्नी – हाँ, यह कल रात का बचा हुआ डिनर ही है।

****

पुलिस – तुमने एक ही दुकान में लगातार ३ रात चोरी क्यों की?
चोर– मैंने सिर्फ एक दिन चोरी की थी, वह भी पत्नी के लिए सूट हेतु। बाकी के दो दिन तो रंग बदलते ने लिए घुसा था।

****

दो बुजुर्ग अदालत में तलाक के लिए गए।
न्यायाधीश महिला से – इस उम्र में तलाक क्यें लेना चाहती हो?
महिला– जज साहब, ये मुझ पर मानसिक अत्याचार करते हैं।
न्यायाधीश ने पूछा– वह कैसे?
महिला – इनकी जब मर्जी होते है तो मुझे खरीखोटी सुना देते हैं, और जब मैं बोलना शुरु करती हूँ तो अपने कान की मशीन निकाल देते हैं।

****

ये 'नहाना' भी अपनी समझ से बाहर है...।
जिस शब्द में ही आगे 'न' है... और पीछे 'ना' है।
तो बीच में यह दुनिया 'हाँ' कराने पर क्यों तुली है...।

****

भिखारी – जनाब, मैं मामूली भिखारी नहीं हूं। मैंने 'पैसे कमाने के १०० आसान तरीके' किताब लिखी है।
राहगीर – तो फिर तुम भीख क्यों मांगते हो?
भिखारी – क्योंकि यह उस किताब में बताया गया आसान तरीका नंबर – १ है।

****

मालिक – अरे वाह रवि, नई कमीज।
काफी मँहगी लग रही है। कहां से खरीदी?
अमित – खरीदी नहीं है, भाई ने भेंट की है।
मालिक – ओह! मुझे लगा कि मैं वेतन ज्यादा देने लगा हूँ।

****

छोटा बच्चा– माँ, तेरे लिए मेरी क्या कीमत है?
माँ – बेटा तू तो लाखों का है... बल्कि करोड़ों का है।
छोटा बच्चा– तो करोड़ों में से पांच रुपए देना, आइक्रीम खानी है।

भिन्नता ढूंढो

• राजेश गुजर

बच्चों, नीचे दिए ७ भागों में फल व तरकारी बनी है, प्रत्येक भाग में कुछ भिन्नता है बताओ कौन से भाग में क्या भिन्न है?

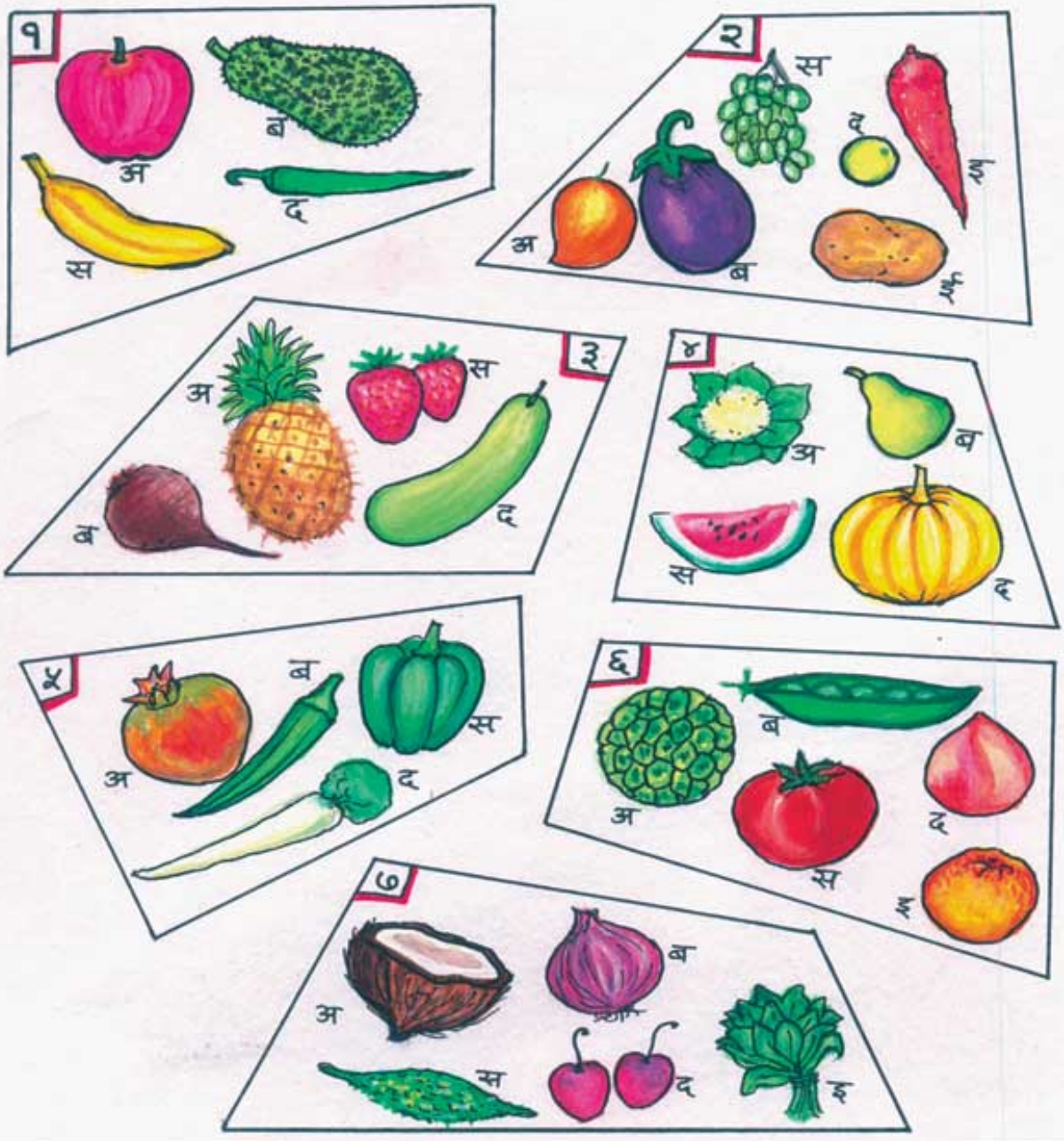

पेड़ों की प्यास

लघु कहानी : डॉ. अनिल 'सवेरा'

विद्यालय में आज उत्सव का सा वातावरण था। प्रधानाचार्य क्लब सदस्यों को सम्मानित कर रहे थे। बहुत दिन से विद्यालय में पानी बेकार बह रहा था। विद्यार्थी पानी पीते और टोंटी खुली छोड़ जाते। कुछ एक-दूसरे पर पानी फेंकते। परिणाम यह होता कि आसपास कीचड़ हो जाता। जब कोई बच्चा फिसलता तो सभी तालियाँ पीटकर खूब मस्ती करते।

अध्यापक सब कुछ देखकर भी चुप रहते। विद्यालय की इको क्लब (पर्यावरण प्रेमी मण्डल) के बच्चों ने कई बार टोंटियाँ बंद की, पर कब तक? हर समय तो वे वहाँ नहीं रह सकते थे। पर वे इस समस्या का स्थायी हल निकालना चाहते थे। उसके लिए सभी ने गहन विचार-विमर्श किया।

अगले दिन शिक्षक और बच्चे विद्यालय पहुँचे तो दृश्य कुछ बदला-बदला सा था। आज न तो कीचड़ था और न ही पानी की बरबादी। इको क्लब के बच्चों ने एक नाली खोद दी थी, जिससे कीचड़ की समस्या तो हल हो गई थी। साथ ही साथ उन्होंने बेकार बहते पानी की समस्या का समाधान भी गजब का कर दिया। खोदी गई नाली को वृक्षों की जड़ों तक पहुँचाकर।

इको क्लब के सदस्यों ने फिर योजना बनाई। उसके अनुसार अब समाधान हमेशा के लिए था।

अगले दिन शिक्षक और विद्यार्थी विद्यालय आए तो सब कुछ अचंभित करने वाला था। आज विद्यार्थी पानी भी पी रहे थे और पानी बरबाद भी नहीं हो रहा था। क्लब के सदस्यों ने नाली को फिर से खोदकर उसमें मोटा पाइप डाल दिया था, वह भी पेड़ों की जड़ों तक प्यासे पेड़ों की प्यासा बुझी तो ऐसा लगा मानो वे मुस्कुरा रहे हों, मुस्कुराहट के साथ-साथ वे धन्यवाद भी कह रहे हों।

● जगाधारी
(हरियाणा)

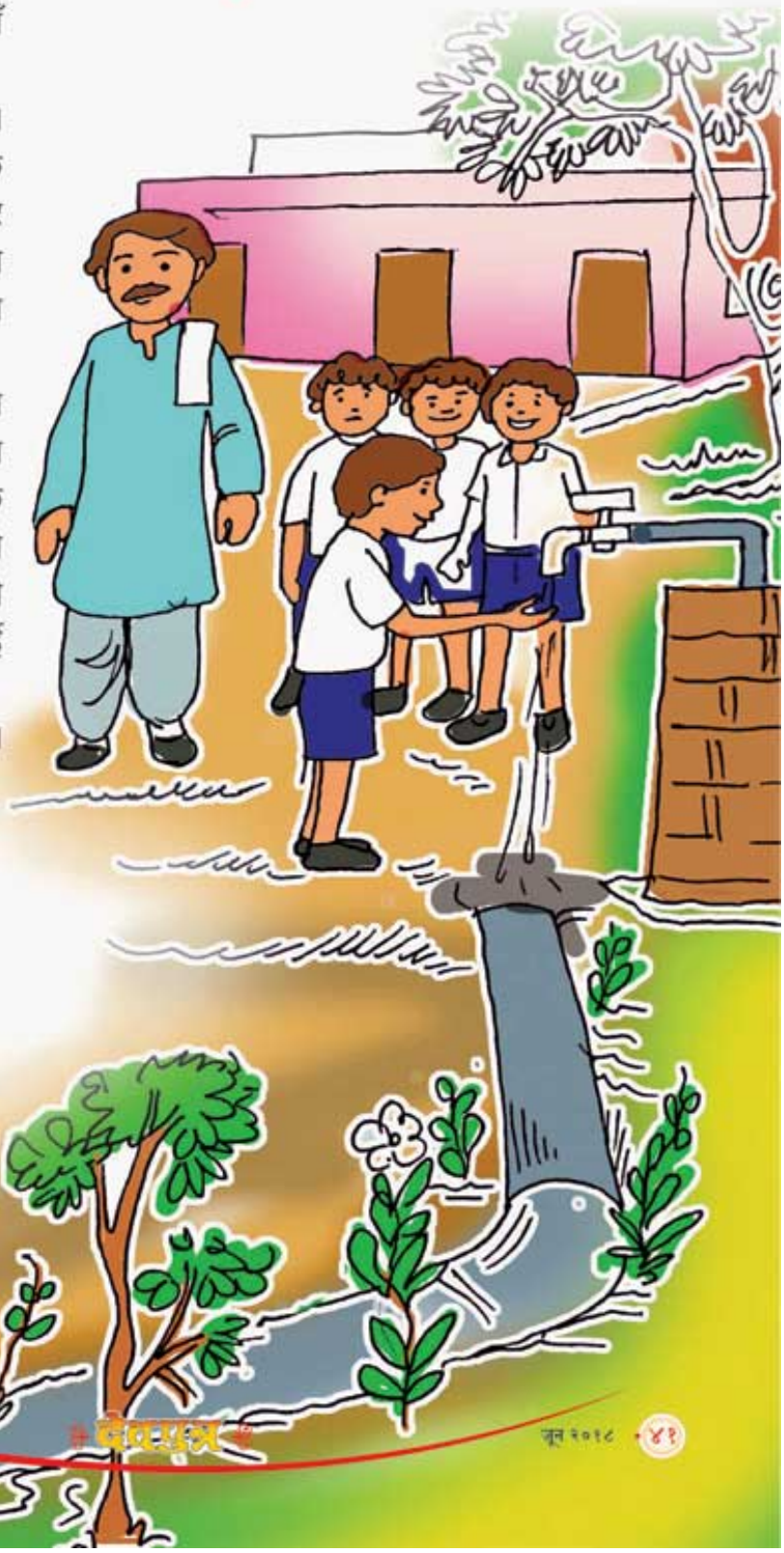

प्यारे गाँव

कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

आंगन में पीपल की छाँव
हमको प्यारे लगते गाँव
अम्बुवा पर कौए की काँव
हमको प्यारे लगते गाँव।

कोयल की मीठी बोली
पक्के रंगों की सेली
गाँव की कच्ची राहों पर
भीगे बच्चों की टोली
और सने मिट्टी में पाँव
हमको प्यारे लगते गाँव।

हरे-भरे लहराते खेत
पनघट पर सखियों का हेत
उड़ती अच्छी लगती है
सोने सी मुट्ठी में रेत
पानी में कागज की नाव
हमको प्यारे लगते गांव।

बच्चों की लंगी सी रेल
गिल्ली डण्डों का वो मेल
खेतों में पकड़ा-पकड़ी
आँख मिचौली का वो खेल
पहलवान के दिखते दाव
हमको प्यारे लगते गाँव।

चोरी से अंबिया लाना
छत पर छुप-छुपकर खाना
नन्हीं मुनियां जब मांगे
उसे अंगूठा दिखलाना
माली की मूंछों पर ताव
हमको प्यारे लगते गांव।

● आकोला (राज.)

|| झाँसी की रानी बलिदान दिवस :१८ जून ||

झाँसी की रानी

कविता : रुद्रप्रकाश गुप्त 'सरस'

झाँसी की रानी से परिचित,
भारत का हर बच्चा।
बीर सही माने में वह थी,
देश प्रेम था सच्चा।।

मोरोपन्त पिता के घर में,
मनु कर्णिका कुमारी।
सुन्दर थी अतएव छबीली,
कह कर गयी पुकारी।

नगर कानपुर के समीप ही,
वह बिठूर में खेली।
नाना साहब की मुँहबोली,
यह बहिना अलबेली।।

तीर और तलवार चलाना,
सीखी अश्व सवारी।
मानो प्रकृति कराती थी कुछ,
पहले से तैयारी।।

गंगाधर से ब्याह रचा था,
वह झाँसी आयी थी।
सोलह की छोटी वय में ही,
वह लक्ष्मीबाई थी।।

सदी उनीसवीं का तिरपन था,
राजा स्वर्ग सिधारे।
झाँसी की रानी के सिर पर,
राज काज अब सारे।।

अंग्रेजी शासन था अब तो,
अपनी घात लगाये।
अट्ठावन सन मध्य युद्ध के,
घने मेघ घिर आये।।

अंग्रेजी की भारी सेना,
झाँसी पर चढ़ आयी।
रानी की भी तैयारी थी,
अपनी फौज लगायी।।

कई दिनों तक रहा युद्ध का,
भीषण तांडव चलता।
मरे हजारों सैनिक फिर भी,
अपने हाथ बिफलता।।

दामोदर को बाँध पीठ पर,
रानी ने गढ़ छोड़ा।
शहर कालपी तक रानी की,
पहुँच गया था घोड़ा।।

यहाँ मोर्चा फिर से संभला,
चमक उठी तलवारें।
मरते दम तक बीर सिपाही,
जय भारत उच्चारें।।

दोनों हाथों खड्ग चलाती,
रही देर तक रानी।
घाव कई थे तन में फिर भी,
हार न मन में मानी।।

किसी फिरंगी की गोली फिर,
आकर धसी हृदय में।
हुई देश हित न्यौछावर वह,
बहुत अल्प सी वय में।।

● हरदोई (उ.प्र.)

नटखट सोहन

कहानी : जयमोहन

सोहन व श्यामा भाई बहन थे। सोहन बड़ा व श्यामा छोटी थी। सोहन बेहद शरारती व नटखट था। श्यामा सीधी व भोली थी। सोहन के घर के बगल में सुन्दर बगिया थी। वहाँ तरह तरह के रंग बिरंगे फूल खिलते थे। सोहन जब श्यामा के साथ खेलने बाहर जाता। फूलों को तोड़ तोड़ कर फेंकता, पौधों को उखाड़ देता। माली काका मना करते तो उन्हें चिढ़ा कर भाग जाता। वह दौड़ कर तितली पकड़ता, उन्हें परेशान करता कभी चुहिया पकड़ कर उसे बांध कर झुलाता। श्यामा मना करती भैया ऐसा मत करो। इन्हें दुःख होगा। वह डाँट कर उसे चुप कर देता। माली काका की बगिया में पानी देने वाली रबर की पाइप रिंकू ने काट दी। काका ने माँ से शिकायत कि– ''माँ जी सोहन ने पाइप काट दिया। सारा पानी बह जाता है। मैं कैसे पानी दूँ। सोहन पौधे भी तोड़ देता है मना करने पर मानता भी नहीं।'' शाम को सोहन के विद्यालय से लौटने पर माँ ने उसे प्यार से अपने पास बुलाया और समझाते हुए कहा, ''सोहन तुम पौधे उखाड़ देते हो। फूल भी तोड़ते हो उन्हें भी दर्द होता है।'' ''अरे माँ! वो तो बोल भी नहीं सकते।'' ''नहीं! बेटे उनमें भी जान होती है। उन्हें भी दुःख होता है। चुहिया को परेशान करते हो उन्हें दूर फेंक आते हो। उसकी माँ भी तो परेशान होती होगी। जैसे तुम्हारे देर से घर आने पर मैं परेशान होती हूँ।''

सोहन को न मानना था सो वह अपनी मनमानी करता रहा। श्यामा माली काका के साथ मिलकर पौधों को पानी देती टूटी क्यारी बनवाती। चिड़ियों को दाना डालती। माली काका खूब आशीर्वाद देते। सभी श्यामा को प्यारे करते जिससे सोहन चिढ़ जाता, और भी ज्यादा मस्ती करता।

एक दिन सोहन ने एक सुन्दर फूल तोड़ने के लिए जैसे ही पौधों को हाथ लगाया उस पर बैठी हुई ततैया ने उसे काट लिया। दर्द से सोहन रोने व बिलबिलाने लगा। वह चीखने लगा। रामू काका ने दौड़कर श्यामा के हाथ में चूना लगाया पानी पिलाया क तब तक माँ भी हल्ला सुनकर बाहर आ गई। ''क्या हुआ सोहन क्यों रो रहा है? माँ जी इसे बर्र (ततैया) ने काट लिया है।'' सोहन का हाथ सूज गया था। माँ सोहन को डाक्टर के पास ले गयी।

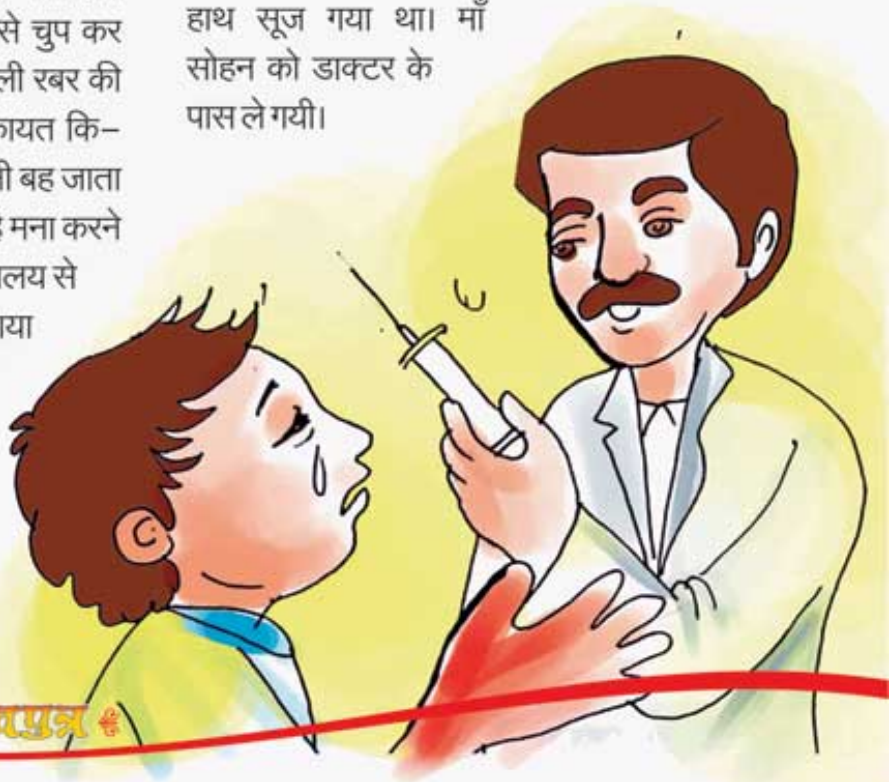

डाक्टर ने दवा दी इंजेक्शन लगाया। सोहन को बुखार चढ़ गया। रोते रोते वह सो गया।

सपने में उसने देखा कि घने जंगल में वह अकेला है। घर का रास्ता भूल गया है। वह डर रहा है, घबराकर चिल्ला रहा है। वह मदद के लिये फूलों को बुला रहा है। वे हँस रहे हैं। फूल आकर सोहन से लिपट गये हैं। वह उसे नोंच रहे हैं। ''मुझे छोड़ दो मुझे बहुत दर्द हो रहा है।'' क्यों जब तुम हमें तोड़कर मसलते थे तो हमें भी दर्द होता था।'' सभी बोले ''सब नोंचो नोंचो।''

तितलियाँ भी आकर सोहन को परेशान कर रही है। ''अब हम इसे सतायेंगे।'' चुहिया ने आकर सोहन का हाथा कुतर दिया। हाथ से खून बह रहा है। ''माफ कर दो हमें छोड़ दो।'' ''नहीं, नहीं ये शैतान बच्चा किसी की भी नहीं सुनता हम सबको परेशान करता है।'' बर्र ने कहा ''इसीलिए मैंने इसे काटा है यह भी तो जाने दर्द कैसा होता है?'' सोहन दौड़ते हुए बरगद से चिपट गया। ''दादा! मुझे बचाओ। मैं सबसे माफी मांगता हूँ।'' ''नहीं दादा! हम इसे सजा देंगे।'' बरगद दादा ने सभी को शांत कराया।'' देखो, अब ये कभी तुम्हें परेशान नहीं करेगा।'' हाँ हाँ, मैं कान पकड़ कर माफी माँगता हूँ। में अब कभी किसी को परेशान नहीं करूँगा। सबसे प्यार करूँगा। जितने पौधे मैंने उखाड़े हैं मैं नए पौधे लगाऊंगा।''

बरगद दादा ने समझाया'' देखो सोहन ने तुम सबसे माफी माँग ली। इसे अब माफ कर दो।'' सबने दादा की बात मान ली। सोहन को छोड़ दिया। बरगद दादा ने कहा रिंकू ये सब तुम्हारे दोस्त हैं। सब मिलकर प्यार से रहना। ''सोहन ! तितली, फूल, चुहिया सब नाचने गाने लगे।

''बरगद दादा की बात समझ में आयी
पेड़ो की रक्षा करने में है सबकी भलाई
पौधों में भी जीवन होती है
उन्हें भी टूटने में दुःख होता हैं।
हम नये पौधे लगायेंगे
अपनी बगिया खूब सजायेंगे।''

सभी पौधे हाथ हिलाते हुए चले गए। सोहन जोर जोर से हाथ हिला कर चिल्लाने लगा। क्या हुआ सोहन तुम हाथ क्यों हिला रहे हो। जागने पर सोहन ने माँ को सपना बताया। माँ ने उसकी की पीठ थपथपाई शाबासी दी। सोहन उठा दौड़कर बगिया में पहुँचा। हवा में पौधे हिल रहे थे। उसे लगा सब नाच रहे हैं। उसने प्यार से फूलों को सहलाया। आज सोहन बदल चुका था उसे अपनी बगिया नई व सुन्दर लग रही थी।

● इलाहाबाद (उ.प्र.)

चित्र बनाओ

● राजेश गुजर

बच्चो, आओ आसानी से बिल्ली का चित्र बनाएँ। सुन्दर रंग भरो।

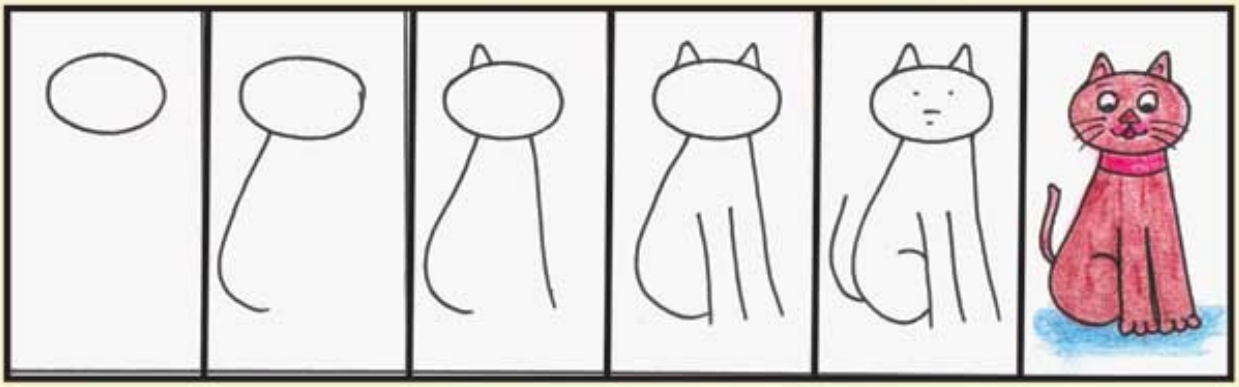

गिल्लू जी का चश्मा

कविता : अनिल कुमार कश्यप

पढ़ने लिखने में दिक्कत है
पड़े आँख पर जोर
चश्मा बनवाओ गिल्लू जी
नजर हुई कमजोर
पहले दायीं आँख बन्द कर
बांयें से देखो जी
लिखी सामने डिब्बे पर
एबीसीडी पढ़ दो जी
सिखे–पढ़े गिल्लू जी ने जब
कसकर रट्टा मारा
धरी रह गई सब चालाकी
डाक्टर ने फटकारा
हुए असफल तुम पढ़ने में
हमें दे रहे चकमा
भागो यहाँ से नहीं मिलेगा
तुम्हें नजर का चश्मा

● शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

राजू को सीख

चित्रकथा - देवांशु वत्स

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

मध्यप्रदेश को 65वें
में

“सर्वश्रेष्ठ फिल्म अनु

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

Heritage Wildlife Pilgrimage Leisure

https://www.mptourism.com

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

राष्ट्रीय फिल्म समारोह
मेला
कूल प्रदेश पुरस्कार''

D-17002

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2018

पुस्तक परिचय

निंदिया ले के साथ चांदनी आ जाना - **डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'** लिखित सुमधुर ४० लोरियाँ एवं २१ प्रभाती गीतों का संकलन। बाल साहित्य से विलुप्त होती विधा को पुनर्जीवन देती रचनाएँ।
प्रकाशन – बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र, भोपाल (म.प्र.)
मूल्य –२५०/–

चिड़िया घर - **प्रतिभा खण्डेलवाल** की १५ बाल कविता और गीतों की सुसज्जित चित्रावली एवं सम्पूर्ण बहुरंगी कलेवर से आकर्षक काव्य कृति।
प्रकाशन – श्री बड़ा बाजार, कुमार सभा पुस्तकालय, कोलकाता (प.ब.)
मूल्य –२००/–

नई सदी के बच्चे - **डॉ. कैलाश सुमन** की विविध विषयों पर ४१ बाल कविताएँ जिनमें संस्कार, रोचकता और बोधकता एक साथ प्रतिफलित है।
प्रकाशन – राजेश्वरी प्रकाशन, भार्गव कॉलोनी, गुना (म.प्र.)
मूल्य –१४०/–

अनोखा जन्मदिन - **महावीर रवांल्टा** की १८ रोचक बाल कहानियाँ जिनमें बालमन की सहज अभिव्यक्ति है, ज्ञानार्जन व मनोरंजन के पर्याप्त तत्व है।
प्रकाशन – चित्रा प्रकाशन, २४२ सर्वधर्म कॉलोनी, सी–सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)
मूल्य –१५०/–

चाँद खिलौना - **प्रल्हारसिंह झोरड़ा** की बच्चों के लिए रसमयी, बोधपूर्व और मनोरंजन से भरी २३ बाल कविताएँ।
प्रकाशन – चित्रा प्रकाशन, २४२ सर्वधर्म कॉलोनी, सी–सेक्टर, कोलारा रोड, भोपाल (म.प्र.)
मूल्य –६०/–

अंकल प्याज - **ईजी. आशा शर्मा** की विभिन्न बाल जगत विषयक विषयों पर रोचक २४ बाल कविताओं का संकलन।
प्रकाशन – चित्रा प्रकाशन, २४२ सर्वधर्म कॉलोनी, सी–सेक्टर, कोलारा रोड, भोपाल (म.प्र.)
मूल्य –६०/–

बाल गीत - बंगाल के प्रसिद्ध बाल साहित्य लेखन, चिंतक **डॉ. उम्मेदसिंह बेद** की जीवन दर्शन, प्रेरणा व बोध सम्पन्न, संवादात्मक बाल कविताएँ।
प्रकाशन – शक्ति प्रकाशन यूनिट ९, ५ फ्लोर, फेज–१, कोलकाता ७०००६३ (प.ब.)
मूल्य –६०/–

श्रद्धांजलि

सूर्य का यूँ अस्त हो जाना...

कहते हैं पूर्वोत्तर के राज्यों में सूर्य देवता जल्दी उदय होते हैं और अस्त भी जल्दी हो जाते हैं। विद्याभारती के विराट गगन में भी ऐसा ही कुछ हुआ। ४ नवम्बर १९३४ को महाराष्ट्र की धरती पर जन्में श्री शंतनु रघनाथ शेंडे जी मात्र ३०वर्ष की अवस्था में हृदय में सेवाभाव लिए जा पहुँचे पूर्वोत्तर क्षेत्र में। इसके बाद तो मानों वे वहीं के होकर रह गए। थोड़ा समय संगठन की इच्छा से वे कानपुर भी रहे पर पूर्वोत्तर से मानों उनका पूर्वजन्म का नाता था।

मा. भाऊराव जी के आग्रह पर वे पुन: अपनी कर्मभूमि पर आ गए। इस मध्य उन्हें विद्याभारती का प्रान्त का दायित्व भी मिला और तत्पश्चात् वे राष्ट्रीय महामंत्री भी मनोनीत किए गए।

देवपुत्र के प्रति उनका स्नेह सदैव छलकता रहा। हम सदैव अनुभव करते थे कि एक जोड़ी आँखें हमारे प्रत्येक कार्य को बड़ा बारीकी से आकलन कर रहीं हैं। उनके विस्तृत पत्र में रचनाओं पर सुझाव वर्तनी की शुद्धियों को लेकर मंतव्य और बहुत आग्रह पर कभी-कभी रचनाएँ भी प्राप्त होती रहीं। अनायास पता लगा २२ अप्रैल, २०१८ को वे पारखी आँखें सदैव के लिए मुंद गईं। 'मैं' शब्द से जिस व्यक्ति ने जीवन भर परहेज किया उन्हीं ने अंतिम संध्या को अपने जीवनभर के कार्यों का लेखा-जोखा अपने सहयोगियों का उल्लेख करते हुए तैयार किया किन्तु वह वृन्तान्त उनके द्वारा प्रारंभ किए कार्यों की तरह अभी अधूरा ही छूट गया है।

श्रद्धेय शंतनु रघुनाथ शेंडे जी के चरणों में विनम्र श्रद्धा सुमन। ईश्वर हमें शक्ति दें कि इन कार्यों को हम पूर्ण कर सकें, तभी तो शेंडे जी के प्रति हम सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगें। सच! पूर्वोत्तर में सूर्यदेव जल्दी अस्ताचल को चले गए।

- डॉ. विकास दवे
प्रबंध सम्पादक

बाल साहित्य के दो महत्वपूर्ण ग्रंथ

हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास

सुप्रसिद्ध बाल साहित्य लेखक समीक्षक एवं शोधकर्त्ता **प्रकाश 'मनु'** की वर्षों के अध्ययन एवं अनुशीलन की बाद तैयार बाल साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करता ग्रंथ

मूल्य -१०००/-

प्रकाशन

प्रभात प्रकाशन

४/१९, आसफ अली रोड़, नई दिल्ली

हिन्दी बाल साहित्य :
डॉ. सुरेन्द्र विक्रम का योगदान

बाल साहित्य शोधकत्री डॉ. स्वाति शर्मा द्वारा प्रतिष्ठित बाल साहित्यकार एवं समीक्षक डॉ. सुरेन्द्र विक्रम के बाल साहित्य विषयक अवदान पर शोधपरक ग्रंथ

मूल्य -४५०/-

प्रकाशन

हिन्दी साहित्य निकेतन

१६ साहित्य विहार, बिजनौर (उ.प्र.)

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१८-२०२०

आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

देवपुत्र *सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक*

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

• संस्थानों/विद्यालयों के लिए १० से अधिक अंक की सामूहिक सदस्यता हेतु वार्षिक सदस्यता	११०/-
• एक अंक	१५/-
• वार्षिक सदस्यता	१५०/-
• त्रैवार्षिक सदस्यता	४००/-
• पंचवार्षिक सदस्यता	६००/-
• आजीवन सदस्यता	११००/-

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना